# विनयपत्रिकासटीक

بنے پترکا سٹیک

## अर्थात्

डुमरांव निवासि बाबू शिवप्रकाश कृत रामतत्त्व
बोधिनी नाम तिलक सहित

श्री सीताराम चरण कमल मलिन्द श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत

## जिसमें

भक्त भयहारी, अवध बिहारी, दीनहितकारी, श्री दशरथ अजिर
बिहारी, रावणान्तकर्त्ता, विभीषणादि भयहर्त्ता, श्री रामचन्द्र
महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुललित भजनों में
निर्मित हैं

105/80

## लखनऊ

तृतीय बार

युत मुन्शी नवलकिशोर जी के यंत्रालय में बक्सर निवासि बाजपेयि पण्डित रामरत्न के
द्वारा शुद्ध हो अति स्वच्छता पूर्वक छपी

## दिसम्बर सन् १८७८ ईसवी



34

# फेहरिस्त पुस्तकों की

## विज्ञप्ति

॥ इस महीने अर्थात् नवम्बर सन् १८७८ ई० पर्य्यंत जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर नियत हुआ है परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| **व्याकरण की पुस्तकें** | कथा यमद्वितीया | सुंदरीचरित्र |
| लघु कौमुदी | आनन्द अमृतवर्षिणी | रामलगन |
| सिद्धान्त चंद्रिका | दशमस्कंध | रामकलेवा |
| **ज्योतिष** | बनयात्रा | सङ्कटावली |
| मुहूर्त चक्र दीपिका | देवीभागवत भाषा | दूसरी पुस्तक रामायणमाला |
| सङ्गहशिरोमणि | सुखसागर | ज्ञानमाला |
| शीघ्रबोध | व्रजविलास | तीसरी रामायण गीताष्टक |
| दैवज्ञाभरण | प्रेमसागर | चौथी ज्ञानदोहावली |
| मुहूर्त गणपति | गोकर्ण माहात्म्य | पाँचवीं रस सारिणी |
| पाराशरी सटीक | सूरसागर | छठी तिथिबोध |
| षट्पंचाशिका | भक्तमाल | सातवीं माल्टदत्तकृत |
| सामुद्रिक | परमार्थ सार | सत्यनारायण की कथा सटीक |
| लघुजातक भाषाटीका सहित | अवधयात्रा | विश्रामसागर |
| जातक चन्द्रिका नागरी | ब्रह्मसार | कल्पसूत्र भाषा नागरी |
| भाषा जातकालंकार | रामायण टेपकी | कथा गंगाजी |
| ज्ञानस्वरोदय | रामायण जिल्दबंधी | शंकर दिग्विजय भाषा |
| रमलसार | गीतावली सटीक | योगवाशिष्ठ भाषा |
| **कोष** | रामायण तुलसीकृत पत्थर की | भाषा महाभारत विजयमुक्तावली |
| अमरकोष तीनों काण्ड | दोहावली रामायण | महाभारत भाषा काशी नरेश कृत |
| तथा प्रथम काण्ड | रामायण सटीक | महाभारत भाषा के उन्नीसों |
| तथा द्वितीय काण्ड | रामायण रामविलास | पर्व्वों में से हर एक पर्व्व अलग |
| शब्दार्थ कोष | सतसई रामायण | भी मिल सकते हैं |
| अनेकार्थ प्रकाश | रामायण मोटे अक्षरों की | विक्रम विलास |
| **पुराण व इतिहास** | तसवीर सहित | **वैद्यक** |
| श्रीमद्भागवत बारह स्कंध | कवितावली रामायण | वैद्यजीवन |
| मार्कण्डेयपुराण | रामायण गीतावली | शार्ङ्गधर भाषा टीका सहित |

## सूचीपत्र अक्षरों [illegible] क्रम से ॥

# अथ विनयपत्रिका

सटीक।

श्रीगणेशाय नमः

कवित्त। तुलसीप्रसादहिय उज्जलसी श्रीरामकृपासोई भवसागर के पुलसो है तसो है। जाकी कविताई ग्रंथपंथ तरंगा सम गङ्गा कीसो धारअङ्गनगमारसी है। परमअनमारतंड उर व्योम ज्यों काम क्रोध लोभ मोह तम निशि नशी है। वाही के प्रकाशमगन सुंह सोनताई अतिसुखदाई जियमेरे आयबसी है॥ १ ॥ दो० हैं तुलसी को गहिरहो जो चाहत विश्राम। बाहर भीतर सहजही होत अधिक अभिराम॥ १ ॥ तुलसिमालधारनकिए बाहर होतसुवेष। तुलसीकृत के गहतही अंतरभक्ति की रेख॥ २ ॥ कलिजीवन कल्याणहितभाषाललित ललाम। किये प्रबन्धवनाय जेहितेहिको करौं प्रणाम ३। प्रथम श्रीमद्रामायणग्रंथको संदर्भ सत्सङ्गविलास नाम कियो तहां श्रीगोस्वामी तुलसीदासजू के अनुग्रहते उनके किये ग्रंथनिको अर्थसय। कुंडिय किञ्चित बूझिपरयो श्रीविनयपत्रिका श्रीगोस्वामि को अंतग्रंथ है सर्वसिद्धान्तको निरूपण यह ग्रंथके विचारे तें प्रतीत होत है तहां यद्यपि ग्रंथ अत्यन्त कठिन है तथापि श्री गोस्वामी की कृपाको अवलम्बकरि यथामति कछु अर्थ लिखे हैं॥

मू०। गाइये गणपति जगवन्दन। शंकरसुअन भवानीनन्दन। सिद्धि
सदनगजवदन विनायक। कृपासिंधु सुन्दर सब लायक। मोदक
प्रियमुदमंगलदाता। विद्यावारिधिबुद्धिविधाता। मांगत
तुलसिदास करजोरे। बसहिं रामसिय मानसमोरे॥ १ ॥

टी०। गणपति शब्द ते ऐश्वर्य सूचत किये जगवन्दन पद करि जगत पूज्यत्व जनाए सुअन औ नन्दन दोनों पद पुत्रवाचक हैं तहां अर्थकी पुनरुक्ति देवेको आशय ऐसो है कि कोऊ की माता श्रेष्ठ होय है कोऊ को पिता इहां माता पिता दोऊ की श्रेष्ठता जनायवे निमित्त पुनरुक्ति पद दिये यहा शिवजी के पुत्र भवानी के नन्दन नाम आनन्दकर्त्ता यह हेतुतें कि श्रीगणेशजू को गर्भ

तें आविर्भाव नहीं है सर्व सिद्धिन्ह को रूप अर्थात् श्री गणपति कृपाव्यतिरेक काहूकोकोऊ सिद्धिकी प्राप्ति नहींहोती अगवन्दन पद ध्यान के अर्थ जानना विनायक नाम बिघनन्ह के स्वामी जो कोऊ जीवध्यान पूजन व्यतिरेक कार्य आरम्भ करैहैताको विघन के कर्त्ता यह भाव है कृपा के समुद्र अर्थात् शीघ्र दयालुहोवेको सुभाव जाको पूर्व गजवदन पद दिया ताते भयानक कोऊ बूझै यह निमित्त सुन्दर कहे सब लायक पदको यह भाव है कि केवल इह लोकको सुख ऐश्वर्यादिहीके दाता नहीं किन्तुयोगिन को परलोक सम्बन्धी सुखके भी दाता यह भाव है लड्डू है प्रिय जाको अर्थात् थोड़े पूजाकों प्रसन्न होवेको स्वभावजाकोमुदनाम अंतरंग आनन्द मंगल नाम बाह्य उत्सव विवाहादि के दाता अर्थात् लेना थोरा देना अनन्त सुख विद्या के समुद्र अर्थात् जो काहू को विद्या होय है सो इनहीं की कृपाकटाक्ष ते बुद्धि के विधाता नाम ब्रह्मा अर्थात् जाके अनुग्रहव्यतिरेकबुद्धिको प्रकाश नहीं होत ऐसे जो श्री गणपति तेहिते तुलसीदास अतिनम्रहो करि याचें हैं कि श्रीजानकी रघुनाथ जू मेरे अन्तःकर्णमें बसें याको यह भाव भयो कि भगवत उपासक को भगवत व्यतिरेक मोक्षपर्यन्त वासना नहीं होति यह भाव है ॥ १ ॥

प्रथम पदको व्याख्या अधिक भयो यह रीतितें सर्व पदन को अर्थ भाव कहते ग्रंथ बहुत विस्तार होयगो यह हेतु तें सुगम पदन को अर्थ तो न लिखेंगे जहां जहां कठिन पद हैं तथा अर्थ को काठिन्य है तेहका भावार्थ कहैंगे तथा जैसे संस्कृत को अन्वय उलटा करि होतहै तैसे अन्वय किये व्यतिरेक बहुत पदन को अर्थ नहीं स्पष्ट होत है एक हेतु जहां तहां नीचेते काहू कहूं मध्य ते अन्वय करि अर्थ लिखेंगे ॥ १ ॥

मू० । दीनदयालदिवाकरदेवा । करमुनिमनुजसुरासुरसेवा । हिम
तमकरिकेहरिकरमाली । दहनदोषदुखदुरितरुजाली । कोक
कोकनदलोकप्रकाशी । तेजप्रतापरूपरसराशी । सारथिपंगु
दिव्यरथगामी । हरिशंकरविधिमूरतिस्वामी । वेदपुराण
प्रगटजसजागै । तुलसीरामभक्तिवरमांगै ॥ २ ॥

टी० । दिनको करैसो दिवाकर अन्यत् स्पष्टहै हिमको पाला तमअंधकार सोई भयो करिनाम हस्ती तेहिके नाश करिबे को

सिंहवत् करनाम किरण तेहका जालनाम समूह जेहको सो कर कालोंदि एकहे कुष्टादि दुःख दारिद्र्यादि दुरितनाम पाप रजनाम है तिसकी नाम परंपरा अर्थात् समूह तेह सबको दहननाम जलावने वाले अग्नि रूप कोक नाम चक्रवाक कोकनद नाम कमल लोक नाम विश्व तेह तीनों को प्रकाश कर्ता अर्थात् श्रीसूर्य के उदय भये चक्रवाकको विरह छूटैहैं कमल विकास होयहै विश्व समस्त अपने अपने कर्म सों प्रवृत्त होतहैं तेजनाम प्रकाश प्रताप नाम और को तापभासित होय रूपनाम शोभा रसनाम औषधि अन्नजलादि जेह सूर्यकी किरण द्वारा सबको उदय होतहै अतएव रसादि पूर्वोक्त को रासियुत जो श्रीसूर्य शब्दार्थ सुलभहै चिदेय स्वरूपकारि कहे शब्दार्थ स्पष्ट है उपासक के हृदयको सिद्धान्त पूर्व पदके अर्थ को कहे सो यहां भी है ॥ २ ॥

सू० । को याचिये शंभु तजि आन । दीनदयाल भक्तआरतिहर सब
प्रकार समरथ भगवान । कालकूटज्वर जरत सुरासुर निजपन
लागि किये विषपान । दारुन दनुज जगत दुख दायक मारयो
त्रिपुर एकहीबान । जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत
संतश्रुतिसकलपुरान । सो गति मरनकाल अपनेपुर देत
सदाशिव सबहिं समान । सेवतसुलभउदार कल्पतरु पारबती
पतिपरमसुजान । देहु काम रिपु राम चरन रति तुलसिदास
कहँ कृपानिधान ॥ ३ ॥

टी० । आर्तिनाशक शिव अन्यत् स्पष्ट है समुद्रमथन ते कालकूट विष निकस्यौ तेहका ज्वरनाम ज्वाला अर्थात् तेज तेहकरि देवता राक्षस सब जरतरहे निजपननाम शरणागत भक्तवत्सल इत्यादि विरदावली सोई है पनज कोलागि नाम तेहपनके रखवेके निमित्त विषको पान किये यह कर्तव्यताते सर्वोत्कृष्ट ऐश्वर्यतया अतिकृपालुता जनाए दारुणनाम कठिन दनुज नाम दनुको पुंच त्रिपुर है नामजाको अन्यत् शब्दार्थ स्पष्ट है यह कर्तव्य ताते शरणागत रक्षण धर्म जनाये समानन नाम सबको तुल्यगतिदाता अन्यत् स्पष्ट है यह कर्तव्यताते दुर्लभपदार्थको दातृत्व जनाये सेवतसुलभ अर्थात् और देवके आराधनसों सामग्री विशेष चाहिये इहां धतूरा बेल पत्र आदि संपादन सों कौड़ी भीन लगै सोई है पूजन की सामग्री को की उदारता कल्पतरुवत् अर्थात् वांछितरूप फलदाता पार्वतीपति

कहिबे को यह भाव है कि जगत को कारण आद्याशक्ति ताहूके पति अर्थात् सबके कारण भूत परमसुजान नाम अन्तर्यामी ह्वै करि सबके हृदय के ज्ञाता प्रार्थना पूर्ववत् ॥ ३ ॥

मू० । दानीकहुं शंकरसे नाहीं । दीनदयाल दिबोईभावै याचक सदासोहाहीं । मारिकैमारथप्यौजगमें ताकीप्रथमरेखभट नाहीं । ताठाकुरको रीझिनिवाजिबो कह्यौ क्योंपरतमोंपाहीं । योगकोटिकरिजोगतिहरसोंमुनिमांगतसकुचाहीं । वेदविदिततेहिपदपुरारिपुरकीटपतंगसमाहीं । ईशउदार उमापति परिहरि अनतजेयाचनजाहीं । तुलसिदासते मूढ़मांगने कबहुं न पेट अघाहीं ॥ ४ ॥

टी० । दीबोई भावै याको यह भाव है कि जो कोऊ दान देहै सो अपने यशके अर्थ कल्याण निमित्त इहां प्रयोजन कछुनहीं तथापि जैसे अन्न पानादि स्वाभाविक जीवकोप्रियहै तैसे देनोई है प्रियजाको तथायाचक कोऊ काऊको प्रिय नहीं लगेहैंइहां याचक अत्यन्त प्रिय है जाको यहं तें औरन ते विलक्षण दातत्व जनाए अन्यत् स्पष्ट हैं मारिके मार नाम कामदेव समाधि को भंगकिये ऐसोबड़ो अपराध बूझिकरि जनलाये अर्थात् मारिडारे थप्यौ जगमें नामरतिके रोदनको देखि कृपाकरि जीवनदै जगत मो स्थापित किए तेहकामदेवको प्रथम रेखनाम पहिले गिनती है भटमाहीं नाम योद्धनके मध्य मो इहांभट शब्दतें सामान्यवीरनकी गिनती नहीं है जगतके जीतिबेको सामर्थ्य जेहको ऐसे जो काम क्रोध लोभ मोह अर्थात् पहिले काम पश्चात् क्रोधादि गिने जातहैं याको एकभाव भयो कि ऐसे अपराधी को क्रोध करि नष्टकिये स्त्रीके ऊपर करुणाकरि फेरस्थित कियेयहजाकी दिग्विजयकह्योंमध्यमो पहिलेरेखहै सोठाकुरजेहजीवकोरीझिकरि निवाजतोको सामर्थ्य ऐश्वर्यमोपै क्योंकरि कह्यौपरेअर्थात् वचन की शक्ति नहीं जो कहिसकै तेहिपद नाम मोक्ष पद विषै समाहीं नाम सर्वजीव तुल्यप्रवेश करै हैं अन्यत् स्पष्टहै कबहुं न पेट अघाहीं नाम सर्वथा याचकबने रहतहैं अर्थात् प्रिय विमुखी को याचना नहीं छुटत यह भाव है ॥ ४ ॥

मू० । बावरोरावरोनाहभवानी । दानिबड़ोदिनदेतदयेबिनु बेद बड़ाईभानी । निजघरकीवरबातविलोकहु हो तुमपरम

सयानी। शिवकी दई संपदा देखत श्रीशारदा सिहानी। जिनके
भाललिखी लिपि मेरी सुखकी नहीं निशानी। तिन्ह रंकनिको
नाक संवारत हौं आयो नकबानी। दुखी दीनता दुखियनके दुख
याचकता अकुलानी। यह अधिकार सौंपिये औरहि भीख भली
मैं जानी। प्रेम प्रशंसा विनय व्यंगयुत सुनि विधिकी वर बानी।
तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगतमातु मुसुकानी ॥ ५ ॥

टी०। एक समयमें श्रीब्रह्माजू कैलाशको गये शिवजूके साथ पार्वतीजू बैठीहैं तहां ब्रह्माजू श्रीमहारानी ते बोलतभये कि हे भवानी तुम्हारो नाह नाम स्वामी बावरो अर्थात् बौड़हा है चेत यह कहौकि तुमकौन लक्षण बौड़हेको देखेतेह पर अगिले तुकतें लक्षण जनावैहैं यद्यपि दानीबड़ो परिदिन देतदये बिननाम रोजर याचकके दिये व्यतिरेक अर्थात् याचक जौबपूजा परिचर्या यावत् न करै तावत् देवेको स्वभाव जाको याको यह भावभयोकि सर्वदेव-गण कर्मानुसारि फल देतहैं तिनते विलक्षण शिवजू याचकके मनसुख होते याचना निवृत्ति करतहैं तहां चेत ऐसो कहौ कि उदारता तो महान गुणहै आपबौड़हा कैसेकहै तेहपर कहै हैं वेदबड़ाई-भानी नाम वेदको ऐसो मर्य्यादहै किजो जैसो कर्मकरै ताको तैसो फलहोतहै कर्मकिये व्यतिरेक काहूको फलकी प्राप्ति नहीं होती ऐसी जो वेदकी बड़ाई ताको भानी नाम भंगकिये अर्थात् नष्टकरि दियेतो वेदके मर्य्यादको उल्लंघनकरनो यह बौड़हेको लक्षणहै अपने तथा इतो लक्षण अपनेघरकी येष्ट बात देखो कौन येष्ट बात सो नहीं कहैं यह हेतुते कि तुम परम चतुर हो अपनेही में आपै बूझो याको यह भाव भयो कि लोकमें यह बात प्रसिद्ध है कि जेतना ओढ़ना तेतनो पांव पसारनो तहां तुम्हारे घरमें धतूरा औ राख इतनो संपति है बर बातपदको यह व्यंग है जेहि शिवके घरमें राखधतूरा मात्र संपति सो एक कोऊ याचकके दई जो संपति ताको देवता लक्ष्मी सरस्वती सिहाति हैं लक्ष्मी तो एह सिहाति है कि जो संपति एक याचकको दिये सो ऐश्वर्य हमसे नहीं है और सरस्वती सिहाति है कि शिव की दई जो ऐश्वर्य तेहको कहिकरि पार हम नहीं पावैहैं याको यह भाव भयो कि घरमें भूजी भांग नहीं औ देना तीनों लोक को ऐश्वर्य एह बुद्धिमानको काम नहीं है एह हेतुतें तुम्हारो स्वामी बावरो है चेत यह कहो कि औरको दोषकहनो बड़नको धर्म

नहीं है तेहि पर अगिले तुक से दोष कहिबे को हेतु बनावत हैं जिनके ललाटको मेरी लिखी लिपि नाम पाती तामें सुखकी निशानी चाहलेश जू नहीं तिनहीं दरिद्रन्ह के निमित्त नाक नाम स्वर्ग बनाते २ हौं आयो नकबानी नाम हमारे नाकन पर दम आयो याको यह भाव भयो कि जाके ललाट को हम सर्वथा दुख लिखे ताको ए तुम्हारो बावरो स्वर्ग सुख देत हैं तेहके निमित्त सो का स्वर्ग बनावनो परै है तो अपने हाथको लिखो आप मिटावनो यह महात्म्य को बड़ो क्षोभ है फेर दूसरो दुख अगिले तुकनें बनावे हैं दुखी दीनता नाम दुखी जीवन्ह को पौरुष हीनता दुखियन्ह को दुख नाम तिन्हीं दुखी जीवन के आधि व्याधिरूप दुख औ याचकता ये सब अकुलानी नाम व्याकुल ह्वै उठे । दुख दूनो दुख जो पाठ होय तौ यह अर्थ है कि दीनता जो दैन्य भाव अरु दुख जो नाना भांति के लोभ सो इनके दुख नाम इन शिवजू की कातर्यता तें दुखी भये अरु याचकता तो विशेष व्याकुल भई यह अर्थ जो वह पाठ है दुखी दीनता दुखियनके दुखयाचकता अकुलानी अर्थात शिवके दातव्यते जगत को यह रहने नहीं पावते याको यह भाव भयो कि मेरे बनाए ए सब हैं सो निकाले जात हैं यह केतो दूसरो दुख है ताते अथवह कहे हैं एक ब्रह्मत्व रूपी अधिकार औरको सौंपहु यह ते भीख मांगिकरि जीवनो भल, भलोकै नेहैं प्रेम प्रशंसा विनय व्यंगयुत नाम मिश्रित जो ब्रह्मा की श्रेष्ठ बानी ताको सुनिकरि शिवजू तो मनहीं मन हसे पार्वती जू स्पष्ट हंसतिभई यह जो ध्यान है सो श्रोतावक्ता को मंगल विस्तार करो अन्तपद विषे प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग यह जो चारि पद दिए सो प्रेम तो सब वचन सो मिश्रित है काहे कि प्रेम व्यतिरेक पूर्वोक्त बानी को कथन नहीं संभवे औ प्रशंसा यो बावरो नियानो तथा यह अधिकार सौंपिए औ रही इत्यादि वचन सो स्पष्ट है विनय तो अपनो ब्रह्मत्व को अधिकार शिवजू के अधीन कराए तथा भीखभली मैं जानी इत्यादि पदकरि जनाये औ व्यंगको यह अर्थ है कि स्पष्ट पदके अर्थ ते जो भासे तेहतें विपर्यय आशय जोह को धुनिकरिके फलित होय ताको व्यंग वचन कहत हैं सो स्पष्टार्थ विषे बौरहा कहे अर्थके आशय ते सब श्रेष्ठता उदारता तथा ऐश्वर्य प्रतिपादन किये याते व्यंग फलित भयो यह अर्थहै ५ ॥

मू । मांगिये गिरिजापतिकाशी । जासुभवनअणिमादिकदासी । औ-

ढरदानिद्रवतपुनिथोरे।सकतनदेखिदीनकरजोरे।सुखसंपति मतिसुगतिसुहाई। सकलसुलभशंकरसेवकाई। गयेजेशरण आरतिकेलीन्हे। निरखिनिहालनिमिषमहं कीन्हे। तुलसि दासयाचकयशगावै। विमलभक्तिरघुपतिकीपावै॥ ६॥

टी०। इहां पति शब्द देहरी दीपक न्याय है जैसे चौखट को चिराग भीतर बाहर प्रकाश करत है तथापति शब्दको गिरिजाऔ काशी दोनों पदमें योजना है अणिमादिक नाम अणिमा गरिमा महिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य ईशित्व वशित्व अक्षरार्थ स्पष्ट है औढरदानि नाम वेदमार्ग तें अन्यथा जो कर्म ताहू के कर्त्ता को दान देवे को स्वभाव जाको पुराण प्रसिद्ध इतिहासहै कि कोऊ एक व्याधा रात्रि में व्याघ्रादि के भय तें पेड़पर चढ़ि रह्यो वा पेड़ के जरिमें कोऊ एक शिवजू को लिंग रह्यो वह व्याधा अन जानते ऊपर तें लघुशंका कियो ताको प्रसन्न होकर बरदान देत भये इत्यादि अनेक इतिहास पुराणादिकमें प्रसिद्ध है द्रवतपुनि थोरे नाम बेलपत्र अक्षतते दयालु होवे को स्वभाव जाको दीन जीव को हाथ जोरे नहीं देखि सकते अर्थात् हाथ जोरने भावते वांछित अर्थ के दाता यह भाव है अक्षरार्थ स्पष्ट है सुलभ पदको यह भाव है कि प्रयास रहित सुखादि प्राप्त होत है आरति के लीन्हे नाम लोभ हरि करिवे के निमित्त अन्यत स्पष्ट है प्रार्थना पूर्ववत्॥ ६॥

मू०। मोसनदीनपरद्रवहुउमावर। दारुणविपतिहरणकरुणाकर।
वेदपुराणकहतउदारहर। हमरिबेरिकाभयउकृपिनतर।
कवनभक्तिकीनीगुननिधिद्विज। ह्वैप्रसन्नदीन्हेउशिवपदनिज।
जोगतिअगममहामुनिगावहिं। तुअपुरकीटपतंगहुपावहिं।
देहुकामरिपुरामचरणरति। तुलसिदासप्रभुहरहुभेदमति॥

टी० हे उमावर दारुण नाम कठिन ऐसी जो विपत्ति ताके हरण कर्त्ता करुणाके आकर नाम खानि याको यह भावभयो कि जो आप सबके विपति हराये और कृपालु हो तो मेरे ऊपर क्यों नहीं कृपा करते तर नाम अतिशय अन्यत् स्पष्ट है इतिहास पुराण प्रसिद्ध है कि गुणनिधि नाम ब्राह्मण रह्यो सो शिवरात्रि के दिन शिव मन्दिर में प्रवेश करि शिवजीको भूषनादि जो रह्यो वाको चोराय लै चल्यो शिवजू के पुजारी सब वाको मारो दैवबस शरीर छूटिगयो ताको शिवलोक भयो तहां गोसाईं कहेहैं ऐसेहु कर्मकर्ताको आप अपनो

धाम दिये तब मेरे ऊपर कृपा क्यों नहीं करते अति कृपण भये हो सो नचहिये अति उदारता जनावत हैं शब्दार्थ स्पष्ट है हे कामदेवके शत्रु भगवत् चरण कमलमें प्रीति देव तेइ प्रीतिके स्थिर होवे निमित्त फेर जाचे हैं कि हे प्रभू भेद बुद्धि दूर करो परमेश्वरतें अतिरिक्त जो देवादिक तासों सत्य बुद्धि सो भेदबुद्धि यह अर्थ है ॥ ७ ॥

मू॰। देवबड़ेदाताबड़ेशङ्करबड़ेभोरे। कियेदूरिदुखसबनिकेजिन्हकर
जोरे। सेवासुमिरनपूजिबोपातआखतथोरे। दियोजगतजहं
लगिसबैसुखगजरथघोरे। गांवबसतबामदेवमैंकबहुंननिहोरे।
अधिभवतिकबाधाभईतेकिंकरतोरे। बेगिबोलिबलिबरजिये
करतूतिकठोरे। तुलसीदलिरूंध्योचहैंसठसाखसहोरे ॥ ८ ॥

टी॰। भोरे नाम भोले लोकोक्ति प्रसिद्ध है अन्यत स्पष्ट है पूर्व पद सों शिवजूको भोले कहे तेहका लक्षण जनावत हैं आख मात्र सेवा जाको पात नाम बेलपत्र आखत जो अक्षत थोड़ो सोई है पूजा जाकी अक्षरार्थ स्पष्ट है याको यह भावभयो कि लेनो अल्पपात ताके बदले मों देनो त्रैलोक्य को ऐश्वर्य्य य होतें भोला कह्यो यह भाव है हे बामदेव तुम्हारो गांव जो काशी तामें सर्वथा बसत हैं पै कबहूं आप को निहोरे नहीं अर्थात् कबहूं कछु जाचे नहीं अब कछु जाचे हैं सो अगिले तुकते कहत हैं अधिभवतिक बाधा नाम भूतन करिके जो पीड़ा इहां भूतशब्दतें कामक्रोधादिको कहे हैं तौन सब जो भूत सो आपके किंकर है नाम आज्ञाके आधीन हैं ते सब भूतनको शीघ्रही बोलाय करि आप मना करो काहे कि कठोर करनी करै हैं कवन कठोर करनी सो अगिले तुकमें कहै हैं तुलसी को दलि नाम उखाड़ि करि वे सब शठशाख नाम डार सहोरे नाम सिहोरको रूंध्यो चहैं नाम रोपवे को चाहै हैं याको यह भावभयो कि तुलसीरूप ज्ञान वैराग्य क्षमा करुणादि को दूरि करि स्त्री पुत्रादि. बिषयक जो मलीन बासना सोई सिहोड़ को डारभयो ताको हृदयमें स्थितकियो चाहें है यह अर्थ है ८॥

मू॰। शिवशिवह्वै प्रसन्नकरुदाया। करुणामय उदारकीरतिबलि
जाउं हरहु निजमाया। जलजनयनगुण अयनमयन रिपुम
हिमाजाननकोई। बिनुतवकृपारामपदपंकज सपनेहु भक्ति
नहोई। ऋषिसिद्धिमुनिमनुज सुरअपरदीव जगमाहीं।
तवपदबिमुखन पारपावकोउ कल्पकोटिचलिजाहीं। अहि

भूषनदूषणरिपुसेवक देवदेवत्रिपुरारी । मोहनिहारदिवा-
करशंकरशरणशोक भयहारी । गिरिजामनमानस मराल
काशीशमसाननिवासी । तुलसिदास हरिचरण कमलवर-
देहुभक्तिअविनाशी ॥ ९ ॥

टी० । शिवशिव दोबार आदरके निमित्तकहे करुणामयनाम करुणाके स्वरूप निजमाया नाम आत्मा जो सांच तेहमो मिथ्या बुद्धि । औदेह जो मिथ्या तामो सत्यबुद्धि । यही मायाको स्वरूपहै अन्यत्स्पष्टहै । जलजनयननाम कमल समाननेत्र । गुणअयन नाम गुणके गृह । मयनरिपु नाम कामदेवके शत्रु । यहतीनोपद संबोधनहैं अन्यत्स्पष्टहै अहिनामसर्पहै भूषणनाम कुण्डलमाला जाको दूषणनाम राक्षस तेहके रिपु श्री रामजू ताके सेवकदेव देवनाम अन्यदेवतन को देवता अर्थात् पूज्य त्रिपुर नाम जो असुर तेहिके अरिनाम शत्रु मोहजो अज्ञान सोई निहार नामकुहेश तेहिकेनाश करबेको सूर्यशङ्कर नाम कल्याणके कर्ताजो जीवशरण होयताके शोक भयके दूरकर्त्ता.पार्वतीजूको मनसोई मानसरोवर तेहमो विहार करबेको हंसरूप काशीशनाम काशीके ईशअर्थातस्वामी मसान जो मृतकके जलबेको स्थानतहांके निवासकर्ता यहविशेषणतें अतिईश्वरता जनायेकि अतिमङ्गल जो प्रेतस्थानसो शिवजू के ध्यानसम्बन्ध करि जीवन्ह को मंगलदायक होतहै यह भावहै पूर्वोक्त ऐश्वर्य विशिष्ट जो आपसो भगवत चरणकमल विषे नाश रहित जो भक्तिसो वरदानमोको देव यह अन्वयहै अन्तकेतुकको अन्वय टेढोहै यह निमित्त अन्वयकरि अर्थ लिखे ॥ ९ ॥

मू० । देव मोहतमतरणिहररुद्रशङ्करशरण हरणममशोकलोका-
भिरामम् । बालशशिभालसुविशाललोचनकमलकामशतको-
टिलावण्यधामम् । कंबुकुंदेंदुकर्पूरविग्रहरुचिर तरुणरवि
कोटितनतेजभ्राजै । भस्मसर्वाङ्गअर्धाङ्गशैलात्मजाव्यालनृकपा
लमालाविराजै । मौलिसंकुलजटामुकुटविद्युत्छटातटिनि
वरवारिहरिचरणपूतम । श्रवणकुण्डलगरलकंठकरुणाकंद
सच्चिदानंदवंदेवधूतम् । शूलशायकपिनाकासिकरशत्रुवन
दहनइवधूमध्वजवृषभयानं । व्याघ्रगजचर्मपरिधानविज्ञान
घन सिद्धसुरमुनिमनुज सेव्यमानं । तांडवीनृत्यपरडमरुडिं-
डिमप्रवर अशुभइवभांति कल्याणराशी । महाकल्पान्त

ब्रह्माण्डभण्डखण्डनभवन कैलाशआसीनकाशी । अजसर्वज्ञ
यज्ञ श अच्युतविभोविश्वभवदंशसंभवपुरारी । ब्रह्मेन्द्रचन्द्रार्क
वरुणाग्निवसुमरुतयमअर्चि भवदंघ्रिसर्वाधिकारी । अकल
निरुपाधिनिर्गुणनिरंजनब्रह्मकर्मपथमेकमज निर्विकारम् ।
अखिलविग्रहउग्ररूप शिवभूपसुरसर्वगतसर्वसर्वोपकारम् ।
ज्ञानवैराग्य धनधर्मकैवल्यसुखसुभग सौभाग्य शिवसानुकूलम् । तदपिनरमूढ़ आरूढ़संसारपथभ्रमतभवविमुख तव
पादमूलम् । नष्टमतिदुष्ट अतिकष्टरतखेदगत दासतुलसी
शंभुशरणआया । देहिकामारि श्रीरामपद पङ्कजेभक्तिअन
वरतगत भेदमाया ॥ १० ॥

टी० । देवपद जहां आवै तहां संबोधनहै । मोहजो है सोई
भयो अन्धकारताको तरणिनाम नाशकरबेको सूर्य ऐसो जो हर
कहे पापहर्त्तारुद्रकहे पापनको भयानकरूप । शंकरनामकल्याणकार
नामकर्त्ता । शरणनाम शरणागत जीवको तथा हमारे शोकके हरन
हार समस्त लोक में अभिराम नाम रमणीय । बालशशि नाम
दुतियाके चन्द्रमा ललाटविषें जाके । सु नाम सुन्दर बड़ो नेत्रकमल
जाको सत कोटिकामदेवको लावण्य नामशोभा ताको धाम नाम
गृह । कंबुनामशंख । कुन्दपुष्प । इन्दु नाम चन्द्रमा । कर्पूर समान
विग्रह नाम शरीर । रुचिर नाम सुन्दर जाको तहां एकौ उपमा
करिके प्रयोजन सिद्ध होतहै चारि उपमाको प्रयोजन कवनसो
कहैहैं । शंखको चिक्कनता औ उज्ज्वलता दोगुण चंन्द्रमाको आह्लाद-
कता कुन्दकेफूलको विकासकपूरको सुगन्धयहभिन्न २ गुणलैकरि
चारों उपमा दियो । तरुण रविनाम दोपहरके सूर्य सो कोटिसूर्य
को तेजनामप्रकाश शरीरविषै सोभैहै जाके विभूतिलगी सबअङ्गमें
जाके आधेअंगविषे हिमालयकी पुत्रीपार्वतीजू बैठी हैं सर्प औ व्य
नामनुष्यताको कपालनाम खोपड़ितेहकामाला विराजैहै जाको
मौलिनाममस्तकविषे शंकुलनाम संकीर्ण अर्थात् घनजटाकोमुकुट
तामे विद्युत्नामबिजुलीताको छटानामदीप्तिअर्थात् चमक जामे
एहते जटाको पीतवर्ण जनायेतेहजटामे तटिनिनाम जो श्रीगं-
गाजूताको श्रेष्ठ जो जलकोप्रवाह सो जल श्रीभगवान्के चरणके
संबंधते पूतंनाम अतिपवित्र शोभैहै जेहजटामे कान मे सांपका
कुण्डल कण्ठमे विष अर्थात् कालकूट को पान कियेसो विषकरि

श्यामता कंठ विषे जाके करुणा जो दया ताकी कंद नाम जड़ अर्थात् करुणाके मूर्त्ति सतचित् आनन्द स्वरूप अवधूत नाम नग्न रहत हैं औ लग्यो है शरीर विषे भस्म जाके ऐसो जो अवधूत बेष ताको हम बंदन करे हैं त्रिशूल बाण पिनाक नाम धन्वा असि जो तरवार सो हाथ जो जाके भक्तन्ह के जो शत्रु सो भये बन तेह को दहन नाम जरावने वाले धूमध्वज इवनाम धुवां है चीन विशेषाको ऐसो जो अग्नि अर्थात् बनको जैसे अग्नि जरावै है तैसे भक्तन के शत्रु को आप नाशकरो हौ वृषभ जो नंदी सोई है यानयाम सवारी जाको व्याघ्र औ हाथीको जो चामसोई परि-धान नामवस्त्र जाको विज्ञान घननाम निविड़ जो बिज्ञान सोई है मूर्त्ति जाको सिद्धादि करि सेव्यमान नाम सेवा करवे योग्य तांडवो जो नृत्य तामें पर नाम तत्पर डमरू जो बाजा ताको डिमडिम शब्द सो प्रचरनाम घोष होत है अशुभ इव नाम अमं-गलकी नाईं भातिनाम शोभत हैं पर कल्याण के राशि अर्थात् बेष अमंगलहै पर जो जीव ध्यानकरे ताको सर्ब मंगल के दाता महा कल्पांत जो महाप्रलय तामें समस्त ब्रह्माण्डको जो मंडल ताको दवननाम नाशकर्ता गृहकैलाश जाको आलीन काशी नाम बैठ्यो है काशीमें जो तज्ञनाम तत्व के ज्ञाता सर्बज्ञ नाम सर्ब के ज्ञाता यज्ञेश नाम यज्ञन के स्वामी अच्युत नाम कबहीं च्युत नहीं बिभोनाम समर्थसमस्त जो बिश्वनाम संसारसो भवत नाम तुम्हारो जो अंशतेहते संभवनाम उत्पत्ति है हे पुरारी नामहे त्रिपुर के शत्रु ब्रह्मा इंद्र चंद्रमा अर्कनाम सूर्य बरुण अग्नि आठों बसु उनचास वायु यम यह सब जो विश्वके कारण सो अर्चिनाम पूजन करिके भवतानाम आपके अंघ्रि नाम चरण को सर्बाधिकारी नाम सो सब अपने अपने अधिकार को पाये हैं अर्थात् सबको अधिकारके दाता कलाकरि रहित अर्थात् सर्बथा पूर्णरूप उपाधि करिरहित अर्थात् शुद्धस्वरूप रजोगुण तमोगुण सत्वगुण तेहतें रहित अर्थात् गुणन्हते परे निरंजन नाम मायाते रहितब्रह्मनाम अद्वैतज्ञान कर्मपथनाम कर्मकोजो मार्गतेह दोऊ को एकनाम मुख्य ज्ञाता पदको अध्याहार है अर्थात् ऊपर ते योजना करना अज नाम जन्मरहित अर्थात् सर्ब काल एक रस निर्बिकार नाम बिकार करिरहित अर्थात् कोई बिकार जाको

स्पर्श न करै है अखिलविग्रह नाम समस्त ब्रह्माण्डहै शरीर जाको उग्र रूपनाम तेजयुक्त रूपजाको ऐसो जो शिव भूपसुर नामदेव-तन्ह के राजा सर्व भूतविषे प्राप्त सर्व नाम सब रूप आपै भयेहैं सब जीवके उपकार कर्त्ताज्ञान नाम सर्व वस्तुको भगवतरूपदेखनो बैराग्य नाम यह लोक तथा स्वर्गादि के विषे सुख बासना ताको त्याग धन जो ऐश्वर्यादि धर्मनाम वर्णाश्रमको बेदबिदित कर्म कैवल्य नाममोक्षसुख नाम जौन बस्तुजाको प्राप्तहोय तेहके भोग-किये सो जो तृप्ति होति है सुभग नाम सुन्दरता सौभाग्यनाम सुन्दरभाग्य जेहते दुःखकी निवृत्ति सुखप्राप्त होतहै यहपूर्वोक्त जो सब कहे सोशिव सानुकूलं नामशिवके सानुकूलभये जीवको मिलत है तदपि मूढ़ जो मनुष्यसो संसार मार्गमोआरूढ़ होकर भ्रमत नाम जन्ममरण को प्राप्त होत है भवनाम हे शिव तुम्हारे पाद मूलतें बिमुख होकर नष्टहै मतिजाकी अतिदुष्ट हृदयजाको कष्ट विषे रतनाम युक्तखेद है गत नाम प्राप्त जाको। ऐसे जो दास तुलसी सो आपके शरण आयो है। तकों हे कामारि श्रीराम चरणकमलां विषेभक्ति जो संसार को हरनेवाली गतभेद माया नाम नष्टभईहै भेदबुद्धि। अर्थात् विषमबुद्धि तथा माया जो विप-रीत बुद्धि जेह भक्ति विषे ऐसी जो भक्ति सो देहिनाम हमको देव यह अर्थ है॥ १०॥

मू०। देवभीषणाकारभैरवभयंकर भूत प्रेत प्रमथाधिपतिबिपति हर्त्ता। मोहमूषकमार्ज्जारसंसारभय हरण तारणतरण अभयकर्त्ता॥ अतुलबलबिपुलविस्तारविग्रहगौर अमलअति धवलधरणीधराभम्। शिरसिसंकुलितकालकूट पिंगलजटा पटलशतकोटिविद्युत्छटाभम्। भ्राजविबुधापगाआपपावन परममौलिमालेवशोभाविचित्रम्। ललितल्लाटपरराजर-जनीशकल कलाधरनौमिहर धनदमित्रम्। इंदुपावकभानु नयनमर्दनमयनज्ञानगुणअयनविज्ञानरूपम्। रवनगिरिजा भवनभूधराधिपसदाश्रवणकुण्डलवदनछविअनूपम्। चर्म असिशूलधर डमरुशायकचापयानवृषभेशकरुणानिधानम्। जरतसुरअसुरनरलोकशोकाकुलंम्टदुलचित अजितकृतगर-लपानम्। भस्मतनभूषनव्याघ्रचर्म्माम्बरं उरगनरमौलिमा-लौरधारी। डाकिनीशाकिनी खेचरंभूचरं जंत्रमंत्रभंजन

प्रबलकल्मषारी । कालअति कालकलिकाल व्यालादिखग त्रिपुरमर्द्दन भीमकर्मभारी । सकललोकान्तकल्पांतशूलाग्र हतदिग्गज।व्यक्तगुणनृत्यकारी । पापसन्तापघनघोर संसृत दीन भ्रमतजगयोनिनहिं कोपित्राता । पाहिभैरवरूपराम रूपी रुद्रबन्धुगुरजनकजननीबिधाता । यस्यगुणगण गणति बिमलमति शारदानिगमनारद प्रमुखब्रह्मचारी । शेषसर्वेश आसीन आनन्दबनप्रणततुलसीदास त्रासहारी ॥ ११ ॥

टी० । भैरवरूप शिवजूको बरणनकरेहैं भीषमनाम भयानकहै आकार जाको ऐसे।जो भैरवभयके करनेवाले अर्थात् काशीविषे कर्म अनुहारी जीवन्हको कोल्हू मे डारि करि दण्डकर्त्ता भूत प्रेत प्रमथ यक्ष सब जो गन ताके अधिपतिनाम स्वामी औभक्तन्ह के बिपति के नाश कर्त्ता मोह जो अज्ञान सो भयो मूषक नाम मूस ताके नाशकरबेको मार्जार नाम बिलाव संसार भयके दूरि कर्त्ता तारण नाम संसारतें पारकर्त्ता तारण नाम आप पाररूप नहीं प्रमाणकरबे योग्य बलजाको। बहुत है बिस्तार विग्रहनामशरीर जाको सोई शरीर गौर तथा निर्मल अत्यन्त धवल नाम उज्वल जो धरनीधराभंनाम पृथ्वीको धारणकर्त्ताजो कैलाशतैसो आभा है शरीर को अर्थात् कैलाश पर्वत समान रङ्ग है शरीरको शिर विषे संकीर्णकल नाम सुन्दर जूटनाम जूड़ानाम जूड़ापीत बरण जटापटल नाम समूहतेह जटाविषैं सो कोटि बिजुली की आभा नाम दीप्ति छटानाम शोभाहै भ्राज नाम शोभतिहै विबुध नाम देवता आपगानाम;नदी अर्थात् देवनदी जो श्रीगंगाजू आपनाम जल परम पवित्र जाको सो मस्तक विषैं मालेव नाम माला की नाईं जटा मे आश्चर्य शोभाहै सुन्दरजो ललाट तेहपर सोभतहै रजनीजोरात्रि तेहकेईशनामस्वामीकलनाम कलाअर्थात् द्वितीया के चन्द्रमाके कलाको धारणकिये हरनाम जो शिवरूप धनद जो कुबेर तेहके मित्रतेहको नौमिनाम हम नमस्कार करैंहैं चन्द्रमा अग्नि सूर्यतीनो हैं नेत्रजाके ज्ञान जो शास्त्रतें उत्पन्न क्षमा करुणादि और जो गुणताको रहबे को गृहरूप विज्ञान जो अनुभव ताके स्वरूप भूधराधिनाम कैलाश अन्यत्स्पष्टहै कालकूट के विष तें जरतजो देवादितेहि तापको जो शोकतेहते अकुलनामव्याकुल अतिकोमल चित्तजो शिवजूसो अजितनाम काहूके जीतबे योग्य

नाहीं जो गरलनाम विषताको हतपान नामपानकरतभये यहतें अतिकृपालुता तथा शरणागत रक्षकत्व जनायें भयाहै शरीरविषे भूषण जाको व्याघ्रको जो चामसोई अंबर नाम वस्त्र जाको सांप को मनुष्य को जो मस्तक ताको मालाउर जो छाती तेहि बिषे धारणकिये डाकिनी शाकिनी जोगिन तथा खेचर नाम आकाश के चलनेवाले भूचरनामभूमिके चलनेवाले जो भूतगण तथा नाश करनेवाले जो जंत्र मंत्रतेहि सबको भञ्जननाम नाशकर्ता प्रबल जो कल्मषनाम पाप तेहिके शत्रु काल अतिकाल नाम कालहू को कालरूपफेरि कलिकाल जो सो भयो सर्प्प ताको अदनाम भक्षण कर्ता खगपती अर्थात् गरुड़रूप त्रिपुरके नाश कर्ता भयानक है भारीकर्म जेहिका समस्तजो लोकताको अन्तनाम नाशकल्पांत नाम महाप्रलय ताको त्रिशूल को जो अग्र नाम नोक तेहि पर हृतनाम छेद्यौ है दिग्गज नाम दिशा के हाथिन को जाने अव्यक्त गुणनाम नहीं है प्रगटगुण जाको अर्थात् निर्गुणपर्वोक्त स्वरूपको धारणकरि महाप्रलय मे नाश करनेवाले पाप जो निषेध कर्म संताप नाम क्लेशसे घननाम निविड़ घोरनाम भयानक ऐसो जो संसृति नाम संसारको प्रवाहरूप जगतविषे नाना योनितासे दीर्ण होकरि भ्रमत जो हमताको कोपि नाम कोऊ चातानाम रक्षकनहीं है पाहिनाम पालनकरो हेभैरवरूप हेरामरूपी रुद्र आपै हो भाई गुरु पिता माता विधाता नाम सबको विधान कर्ता येहिके गुणकों गणतिनाम कहति हैं निर्मलमति करिके सरस्वती बेद नारद प्रमुखनाम आदि लैकरि और जो ब्रह्मचारी सब तथा शेषनाग यह सब जाके गुणको कहिरहे हैं ऐसो सर्वज्ञ नाम सबके ईश जो आप आसीननाम बैठे हौ आनन्दवन काशी विषें जो सो प्रणतनाम प्रणाम करता जो तुलसीदास ताके त्रास को हरणकरो हे स्वामी ॥ ११ ॥

मू०। सदाशङ्करंशंप्रदंसज्जनानंददंहैमकान्यावरंपरमरम्यम्।काम
मदमोचनन्तामरसलोचनंवामदेवंभजेभावगम्यम्।कंबु कुंदेंदु
कर्पूरगौरंशिवंसुन्दरंसच्चिदानन्दकन्दम्। सिद्ध सनकादि
योगीन्द्रवृन्दारका विष्णु विधिवंद्यचरणारविंदम्। ब्रह्मकुल
वल्लभं सुलभमतिदुर्लभं विकटवेषं विभुं वेदपारम्। नौमि
करुणाकरं। गरलगंगाधरंनिर्मलंनिर्गुणंनिर्विकारम्। लोक

नाथं शोकशूलनिर्मूलिनं शूलिनं मोहतमभूरिभानुम्। कालकालं कलातीतमजरं हरं कठिनकलिकालकाननदवानुम्।
तज्ज्ञमज्ञानपाथोधिघटसंभवं सर्वगं सर्वसौभाग्यमूलम्। प्रचुरभव-भंजनं प्रणतजनरंजनं दासतुलसीशरणसानुकूलम्॥ १२॥

टी०। सर्वदा शं नाम कल्याण के कर्ता शं नाम सुख प्रदं नाम दाता सज्जनन्हको आनन्दके द नाम दाता शैलकन्या जो पार्वतीजू ताके वरं नाम स्वामी परम नाम श्रेष्ठ रम्यं नाम रमणीय अर्थात् अति सुन्दर कामदेव के मद छोड़ावने वाले नाम रम नाम कमल तेमोहै नेत्र जाको वामदेव जो शिवजू तेहको भजे नाम हम भजन करेहैं भावगम्य नाम प्रीति करि जाने जातहैं सत्‌चित् आनंदके कन्द नाम मूल अर्थात् मूर्ति अन्य शब्दन्ह के पूर्व अर्थ करि आये हैं वृन्दारका नाम देवता साक्षात् विष्णु ब्रह्मा और पूर्वोक्त सिद्धादि जो सबतेन्ह करिकेवंद्य नाम वंदन करवे योग्य चरण कमल जाको ब्राह्मण कुल के वल्लभं नाम प्रिय सुलभं नाम भक्तन्हको सुलभ तें प्राप्त अति दुर्लभं नाम विमुखन्हको अति कठिन विकट वेष नाम असुर बुद्धिन्हके दृष्टिमें भयानक है भेष जाको विभुं नाम व्यापक वेदपारं नाम वेद जाको पार न पावे है करुणा के आकर नाम खानि अन्य शब्दन को अर्थ पूर्व लिखेहैं ऐसे जो शिव ताको नौमि नाम नमस्कार करेहैं समस्त लोक के स्वामी शोकनाम प्रिय वस्तु के नाश भये जो दुःख शूल नाम दुःख के भोग सो जो पीड़ा ताको निर्मूलिनं नाम जड़ तें नाश कर्ता शूलिनं नाम त्रिशूल को धारण किये मोहरूपी जो तम नाम अन्धकार ताके दूर करवे को भूरि नाम बहुत सूर्य्य समान कालकालं नाम कालहू के काल कलातीतं नाम कलातेपरे अर्थात् सर्वदा सम्पूर्ण रूप अजरं नाम जरातें रहित अर्थात् दृद्धत्व अवस्था जाके नहीं हरं नाम शिव कठिन जो कलिकाल सोई कानन नाम बन ताके जलाइबे को कृशानु नाम अग्नि तज्ज्ञं नाम तत्त्व के ज्ञाता अज्ञानरूपी पाथोधि नाम समुद्र ताके सोखवेको घट सम्भवं नाम अगस्त्य समान सर्वगं नाम सर्व जड़चैतन्यामे प्राप्त औ सर्व जो सौभाग्य तेहके मूलं नाम उत्पत्ति स्थान प्रचुर नाम समूह अर्थात् बहुत जो भव नाम संसारको दुःख ताको नाश कर्ता प्रणाम करत जो जन ताको रंजनं नाम आनन्द दाता शरणागत जीवको सर्वथा सानुकूलं नाम सन्मुख ऐसो जो आपहैं शिवजू ताके शरण विषे तुलसी प्राप्त है॥ १२॥

मू०। सेवहुशिवचरणसरोजरेनु कल्याणअखिलप्रदकामधेनु। कर पूरगौरकरुणाउदार संसारसारभुजगेन्द्रहार। सुखजन्मभूमि महिमाअपार निरगुणगुणनायकनिराकार। त्र्यनयनमयन मरदनमहेश अहंकारनिहारउदितदिनेश। बरबालनिशाकर मौलिभ्राज त्रैलोक्यशोकहरप्रमथराज। जिन्हकहँबिधिसुगतिन लिखीभाल तिनकीगतिकाशीपतिकृपाल। उपकारीकोपरहर समानै सुरअसुरजरतकृतगरलपान। बहुकल्पउपायकरियेअ- नेक बिनुशंभुकृपानहिंभौबिवेक। बिज्ञानभवनगिरिसुतारमन कहतुलसिदासममत्रासशमन॥ १३॥

टी०। शिवजू के चरण कमल की धूलि को सेवन करो यह अपने मनको उपदेश करत हैं कैसी वह धूलि है अखिल नाम संपूर्ण जो कल्याण ताको देने वाली कामधेनु समान कपूरमान गौरहै शरीर जाको करुणा जो दया तेहकरिकै अत्यन्त उदार अर्थात् सर्व सुखको दाता संसार बिषे सार रूप भुजगेन्द्रनाम सर्पन को राजा जो शेष सोईहै हार जेहको सुखके जन्महोबेको भूमिनाम उत्पत्ति स्थान हौ महिमाहै अपार जाको निर्गुण नाम रजोगुण तमोगुण सत्वगुण के आधीननहीं सर्वगुणनके नायकनाम स्वामी अर्थात् जाके प्रेरणाकरि गुण सब प्रगट होतहैं निराकार नाम नहीं है आकार जाको अ- र्थात् पंचभौतिक देह नहीं अहंकार जो सोई भयो निहार नाम कुहरा ताके नाशकरबेको उगे हुये दिनेशनाम सूर्य्य अन्यत् स्पष्टहै बरनामश्रेष्ठ बालनिशाकरनाम द्वितीयाके चन्द्रमामौलिनाम मस्तक बिषे भ्राजनामशोभितहै प्रमथगणके राजा और तिनकीगति याको यहभावहै कि ब्रह्माकी लिखोमिटाइबेकी सामर्थ्यहै जेह शिवजूकी अनाराधे स्पष्ट है हरनाम शिवजू के समान पर नाम अन्य उपकार कर्ता सो अगिली तुकतें जनावतहैं स्पष्टहै॥ १३॥

मू०। देखोदेखोबनबन्योआजुउमाकान्त। मनोदेखनतुमहिंआईऋतु बसन्तमनुतनदुतिचंपककुसुममाल। बरबसननीलनूतनतमा- ल। कदलिजंघपदकमललाल सूचककटि केहरिगतिमराल। भूषणप्रसूनबहुबिबिधिरंग नूपुरकिंकिणिकलरवबिहंग। कर नवलबकुलपल्लवरसाल श्रीफलकुचकंचुकिलताजाल। आनन सरोजकचमधुपपुञ्ज। लोचनबिशालनवनीलकंज। पिकबचन चरितबरबर्हिकीर मितसुमनहासलीलासमीर। कहतुलसि

दासतुलसिशिवसुधाम। सुरवधिप्रमंधरवेषपथवान। करिकृपा
हरियभ्रमफंदकाम। जेहिहृदयबसहिंसुखरासिराम॥ १४॥

टी०। आसु उमाकान्त बनको रूपवर्ण्यो है ताको देखो इहां अपने मनको देखावत हैं कैसो मनवने हो आज है शिवजू तो तुम्हारे देखने को मनो साक्षात् वसन्तऋतु आई है यह पद विषै शिवजू के अङ्ग को बनरूप करि कहत हैं कैसो बन है औ कैसो शिवजू को शरीर है सो कहत हैं। बनविषै चम्पाके पेड़ फूले हैं इहां पार्वतीजू आधे अङ्ग में बैठी हैं सो महारानी के शरीर की जो द्युति सोई मानो चम्पाके फूलको माल नाम समूह फूल्यो है इहां गौर शरीर औ चम्पाके फूलको पीतवर्ण की समता है तथा फूलमें विकास होत है सो शरीर विषैं विकास गुण प्रत्यक्ष है बन में तमालको वृक्ष होत है सो इहां महारानी श्रेष्ठ बसननाम साड़ी नीलनाम श्यामरङ्गकी पहिरे हैं सोई तमाल वृक्षभयो नूतननाम नवीन इहांभी दो गुण वृक्षको वस्त्रविषै जनावत हैं एकतो श्याम रङ्गको समता दूसरो वृक्षविषै प्रकाश गुण है सो गुण साड़ीविषै भी है बनमें वृक्ष होत है कलनाम मधुर कदली नाम केला को वृक्ष है इहां महारानी को जंघा सोई कदली वृक्षभयो कदलीखंभ समान जंघाको वर्णन करनो कविन्हकी परम्परा है बनमें सरोवरविषै कमल फूले हैं इहां महारानीको जो पदतल सोई लाल कमल भयो बनमें सिंह होत है इहांकटि जो कमर सोई केहरि नामसिंह ताको सूचतनाम जनावे है सिंहको कटि सूक्ष्म होवे है इहांसूक्ष्म ताकी समता कटिविषै कहे पूर्वउक्त में कमलको वर्णन करि जलाशय सूचित भयो तो जहां जलाशय होत है तहां हंसको कवि सब वर्णन करत हैं सो महारानी को गति जो गमन सोई हंसभयो इहां मन्दगति ते समता जनाये बनमें बहुत रंगके बहुत फूल होत हैं इहां महारानी को भूषणनाम जो गहनो तामें अनेक रंग के जो मणि जड़े हैं सोई बिबिधि रंग के फूल भये इहां अनेक रंगकी समता किये बनमें पक्षिन को शब्द होत है इहां महारानीके पगन्हमें जो नूपुर औ कटिविषै किंकिणी नामक्षुद्रघण्टिका ताको जो शब्द सोई विहंग नाम अनेक पक्षी को कलनाम मधुर रवनाम शब्द समानभयो इहां मधुरता की समता जनाये बनमें मौलसरी औ आमको वृक्ष होत है इहां शरीर रूप जो

वृक्ष ताविषै करनाम जो दोऊ हाथ सो बकुल नाम मौलसरी रसालनाम आम ताको नवीन पल्लव तुल्य भयो इहां हाथ औ नवीन पल्लव तें कोमलता समता किये बनमो बेलको दृढहोतहै इहां कुचनाम स्तन सोई श्रीफलनाम बेलके फलतुल्य भयो तथा बनविषै लताहोत है इहां कंचुकि नाम जो चोली सोई लताको जालभयो सो फलन्हके ऊपर चढ़िरह्योहै लालकमलको पूर्व वर्णन किये अब और रङ्गके कमलनको जनावतहैं आनन जो मुख सोई सरोज नाम पीत कमल भयो जब कमल भयो तब भ्रमर चाहिये सो महारानी को कचनाम जो बार मुखपर छूटिरहे हैं सोई मधुप पुञ्ज नाम भ्रमरन्ह के समूह भये बड़े २ जो नेत्र तामो जो गोलक सोई नवीन श्यामकमल भयो बनमो पपीहा तथा मोर सुगाकी बोली होतिहै इहां महारानीको जो बचन चरित नाम बचनन्ह की रचना बरनाम श्रेष्ठ सोई पिक नाम पपीहा बरहि नाम मोर कीर नाम सुगाको शब्द तुल्यभयो बनमो उज्वल पुष्प होतहैं इहां महारानीको जो हासनाम मन्दहंसनि सोई सित सुमन नाम उज्वल फूल भयो लीला नाम शिवजू के साथ अनेक रसकी चेष्टा सोई समीरनाम शीतमन्दसुगन्ध त्रिविधि वायुभयो तुलसीदास प्रार्थना करेहैं किये उरनाम हृदय विषै बसि करि पञ्च बाणनाम जो कामदेव सो प्रपञ्च की रचना करैहैं अर्थात् अनेक कामना उठावैहैं ताको हे शिवजू शान नाम सुन्दर जान-कार रूपाकरिके कामदेव को जो भ्रमको फन्द अर्थात् स्त्री विषैं जो चेष्टा सोई जाल जीवरूपी पक्षीके फंसाइबे को ताको हरिये नाम आप नाशकरो जेहतें हृदयमो सुखके राशि जो श्रीरामजू सो बसैंयाको यह भावभयो कि कामदेव शिवजूको शत्रुहै ताको पूर्वजलाये हैं सो गोसाईं जनावत हैं कि सोई जो कामदेव सो आपके शरणागत जीवनको दुःखदेतहै वाकेतरफ आप एकबार देखौ जो वह नाशको प्राप्तहोय काहे कि यावत् हृदय मो काम को वासहै तावत् श्रीरामजू नहीं बसतहैं यह भावहै ॥ १४ ॥

मू० । दुसह दोषदुखदलनि करुदेविदाया । विश्वमूलासिजनभानु
कूलासिसरशूलधारिणिमहामूलमाया । तड़ितगर्भाङ्गस-
र्वाङ्गसुन्दरलसतदिव्यपटभव्यभूषणविराजै । बालमृगमंजुखंज
निमिलोचनिचन्द्रवदनि लखिकोटिरतिमारलाजै । रूपसुख

शीलसीमासिभीमासिरामासिवामासिवरबुद्धिवानी । छमु-ख हेरम्बअंबासिजगदम्बिके शंभुजायासिजयजयभवानी। चण्ड भुजदण्डखण्डनिबिहण्डनिमुण्डमहिषमदभङ्गकरि अङ्गतोरे। शुम्भनिशुम्भकुंभीशरणकेशरिणि क्रोधवारिधिबैरि वृन्दबोरे। निगमआगमअगमगुर्व्वितवगुणकथनउर्व्विधर करतजेहिस-हसजीहा। देहिमामोहिपनप्रेमयहनेम निजराम घनश्याम तुलसीपपीहा ॥ १५ ॥

टी० । नहीं सहवेयोग्य जो दोष तथा दुखतेहकों दलनि नाम नाश करनेवाली ऐसी जो आप हे देवी सो दयाकरो यह पद विषें दोष दुखहरण करबे को प्रार्थना किये सो वेद की आज्ञा जो ने वर्णाश्रमकों जवन धर्म तेहतें उलटा अधर्मनें प्रवृत्तिताको दोष कहिये गेह अधर्म का जो फल ताकों भोगकरते जो पीड़ा उत्पन्नहोतहै सोई दुखहै फेर आप कैसीहो हे देवी समस्तविश्व की मूल नाम उत्पत्ति स्थान असि नाम है। फेर जनन के ऊपर सानुकूलहै। असिशब्द जहां आवै तहांहै। अर्थ जानना फेर आप कैसी है। दुष्टन्ह के निमित्त बाण औ शूल धारन कियेहै। महा-मूल नाम आद्याशक्ति है। अर्थात् सर्व सृष्टि की करने वाली है। बिजुली को जो गर्वनामसार तैसोहै प्रकाशनाम अङ्ग जाको सर्व अङ्ग सुन्दर शोभित है दिव्य नाम आश्चर्य जो वस्त्र ताको धारण किये भव्यनाम अति रमणीय जो भूषण सो बिराजे हैं अङ्ग विषें बालक जो हरिनमंशुनाम सुन्दर जो खञ्जनिनाम खञ्जरीट तत्तुल्य विलोचनि नाम विशिष्टहै नेत्रजाको बालक जो हरनि तथा खञ्ज-रीट अति चञ्चलहोतहै सो नेत्रको खञ्जरीट औ हरिनकी समता केवल चञ्चलता एक धर्म लै कवि सब कियेहैं फेर आपकैसी हैं। हे माता चन्द्रमा समान है मुखजाको जा छबिको लखिनाम देखि करि कोटिन रतिको जो अभिमान सो लज्जित होतहै रूप सुख शील की शोभा नाम सिवान है। अर्थात् अन्यत्र काहू मों ऐसो रूपादि नहीं है तथा दुष्टन को भीमासि नाम भयदेनेवाली हो रामासि नामलक्ष्मी हौ वामासि नाम जो रूपहौ यद्वा वाम नाम सुन्दरीहौ श्रेष्ठहै बुद्धिवानी जाकी छमुख नाम छः हैं मुख जाकों ऐसो जो कार्तिकेयजू हेरम्ब नाम गणेशजू तेहके अम्बासि नाम माता हो। फेर जगत की अम्बिका नाम माता शिवजू की

जाया नाम स्त्री हौ ऐसी जो आप सो जयको प्राप्त होउ हे भवानि अत्यन्त आदर के अर्थ जय २ दो बार कहे चण्ड नाम राक्षसको प्रबल जो भुजदण्डताको खण्डनिनाम तोड़नेवाली तथा मुण्डनाम जो असुर ताकों विहण्डनिनाम विशेषकरि नाशकरने वाली महिषनाम जो असुरताके मदकों भङ्गकरि अंगन्हकोंतोस्यो है जानेशुंभ निशुंभनाम जो असुर सोईभयो कुंभीशनाम हाथिन्ह को ईश अर्थात् उन्मत्त हाथीताके नाशकरबेको रणविषैं केहरिनि नाम सिंहिनि फेर दुष्टन के ऊपर जो क्रोध सोई बारिध नाम समुद्र ताविषैं बैरी जो असुर हन्दनाम समूह ताकोंं बोरे नाम डुबायेहैं जाने निगम जो वेदआगम जो नारद पञ्च रात्रादिक ताहूको अगमनाम कठिनगुर्विनाम गरिष्ट अर्थात् भारीतुम्हारो गुण कथन है उर्वि नाम पृथ्वी ताकों धारणकर्ता जो शेषनाग कहतेहैं जेह गुणको हजार जीभतें परि उनहूं को अगम है सा नाम हेमाता मोकों पननाम प्रतिज्ञा तथा प्रेम यहनेम नामजो कबहीं छूटेनहीं ताको दृष्टान्तदेतहैं कि जैसे स्वातीनक्षत्रको श्याम घन नाम जो मेघ तेहि विषैं जैसो पपीहा को नेम प्रेम पन है तैसो निजनाम अपने स्वामी जो श्रीरामजी सोई भये श्याम घन मेघ तेहविषै पपीहा रूप तुलसीको करो अर्थात् सोनेम प्रेमपन मोकों देव यह अर्थ है ॥ १५ ॥

मू० । जयजयजगजननिदेवि सुरनरमुनिअसुरसेवि भक्तिभुक्तिदा-
यिनिभयहरणिकालिका। मङ्गलमुदसिद्धिसदनिपर्वशर्वरीश
वदनितापतिमिरतरुणतरणिकिरणमालिका। वर्मचर्मकरि
कृपाणशूलशैलधनुषबाणधरणिदलनिदानवदलरणकराालि-
का। पूतनापिशाचप्रेतडाकिनिशाकिनिसमेतभूतग्रहबेताल
खगमृगालिजालिका। जयमहेशभामिनिअनेकरूपनामिनि
समस्तलोकस्वामिनिहिमशैलबालिका। रघुपतिपदपरमप्रेम
तुलसीयहअचलनेमदेहुह्वैप्रसन्नपाहिप्रणतपालिका ॥ १६ ॥

टी० । जय २ पूर्ववत् हे देवी जगतकी माता जो आप देवता मनुष्य मुनिअसुरन्ह करिकै सेविनाम सेवित अर्थात् सब सेवाकरतेहैं जाको भक्तन्हकों भुक्ति नाम ऐश्वर्यको देनेवाली तथा भयकी हरणिहारी ऐसी जो आप कालिकारूप मंगल जो उत्सव मुदनाम आनंद सिद्धि जो आठ पूर्व कहे ताको सदनि नाम गृहहौ पूर्व नाम पूर्णमासी

शर्वरी जो रात्री ताके ईशनाम स्वामी अर्थात् पूर्णिमाके रात्रिको चन्द्रमा तैसोहै यदनिनाम सुखजाको तापजो कायिक वाचिक मानसिक सोई भयो तिमिरनाम अंधकार ताके नाश करबेको तरुण नाम युवा अर्थात् दोपहरके तरणिनाम सूर्यतिनकी किरण की मालिकानाम समूहरूप अर्थात् जैसे अंधकार कों सूर्यनाश करैहैं तैसेआपजीवन्हके तापकोनाशकरतिहै। एकभावहै वर्मनामबखतर धारणकरतीहै। चर्मनाम ढाल कृपाणनाम तरवार करनाम हाथ मेंा जाकेशूलनाम त्रिशूल सेल नाम सांगि तथा धन्वा बाण धरणि नाम धारण कियेहै। एहरूपतें दलनिनाम नाश करतिहै। दानवन्हको दलनाम फौज रणनाम संग्राम के विषैं करालिका नाम कठिन भयानकरूप जाको पूतनाआदि वैतालअन्त पर्य्यन्त ये सब प्रेतगणके जातिभेदहैं सो सबभये खगनाम पक्षी म्रग नाम पशु आलिनाम परंपरा अर्थात् समूहतेइ सबके बुझाइबेकों जालिका नाम आपजालरूपहो अनेकरूप नामिनि नाम बहुतहैं नामरूप विदितशास्त्र विषैजाको प्रणतपालिका नाम प्रणाम करत जोजन ताकों पालनकरनेवाली ऐसीजो आपसो पाहिनाम पालन करो तुलसीको अन्यत शब्दार्थ स्पष्टहै प्रार्थना पूर्व्वक॥ १६॥

मू०। जयभगिरथनंदिनि मुनिचयचकोर चंदिनि नरनाग विबुध बंदिनिजयजन्हुबालिका। विष्णुपदसरोज जासिईशसीसपर बिभासित्रिपथगासिपुण्यराशि पापछालिका। विमलविपुल बहसिवारिशीतल त्रयतापहारि भंवरवर बिभंगतरतरंगमालिका। पुरजनपूजोपहारशोभित शशिधवलधार भंजन भवभारभक्तकल्पथालिका। निजतटवासीबिहंग जलथलचर पशुपतंग कीटजटिलतापस सबसरिसपालिका। तुलसीतव तीरतीरसुमिरतरघुवंशबीर बिचरतमतिदेहि मोहमहिष कालिका॥ १७॥

टी०। भगिरथकी नंदिनीनामपुत्री अर्थात् भगिरथके हेतुकर पृथ्वीमेंा गंगाजू प्रगट भईं तेहते पुत्री कहे मुनिन्ह के चय नाम समूह सोई भये चकोरताको आनंद देवेकों चंदिनिनाम उजेरी रात्रि मनुष्यनाम विबुध नाम देवता तेइ सब करि बंदिनि नाम वंदनकरिबे योग्य जन्हुमुनिकी बालिका अर्थात् जन्हुमुनिके आश्रम कों डुबोये तबजन्हु पानकरि गये जबभगीरथ जा करके जन्हुमुनि

को स्तुति किये तब गंगाजूको आविर्भाव फेरकार देत भये एह हेतु तें जन्हुमुनिकी बालिकानाम पुत्री कहत हैं विष्णुके चरण कमल ते जासिनाम उत्पन्न है। ईशजो शिवजू ताकेमाथेपर बिभासिनाम विशेषकरि शोभित है। त्रिपथ नाम तीनमार्ग स्वर्ग पाताल म्हत्यु लोकविषै गासिनाम गई है पुण्यकी राशि है। पापन्हकीं छालिका नाम धोनेवाली है। निर्मल बहुतजो जल ताकीं बहसि नामअपने विषैं धारण करतिहै। कैसो जल है शीतल त्रयताप नाम अध्यात्म जो देहतें उत्पत्ति रोगादिको ताप अधिभूत जो अन्यजीवन्हकरिके पीड़ा होय अधिदैव नामदैवकृत शीत उष्ण करिके जो ताप एह तीनों तापकीं हारिनाम हरतिहै। भंवरनाम चकोरताकीं श्रेष्ठ बिभंगनाम गतितथा तरनाम अतिशय तरंगकी मालिका नाम समुहकिनारेमो जो पुरबसतहैं तहांके लोजन तेहकरिके कियो जो पूजा तेहिपूजाको उपहारनाम सामग्री तेहते शोभितहै चन्द्रमा समानधवलनाम उज्वलधारा संसार कीं भारनामबोझा अर्थात् जन्ममरणरूप जो दुःखतेहिकोभजनिनाम नाशकरने वाली भक्तन्ह केवांछित अर्थ देबेको कल्पथालिका नामकल्पवृक्ष के उदयहेबेको थालारूपअपने किनारेके निवासकर्त्ता.जो पक्षीजल थलचर नाम जलमो चलनेवाले जो जलजंतु अस्थलके चलनेवाले जो पशु पतंग नाम सलभ उड़ने वालेकीड़ा कीटनाम और जातिके जो कीड़ा जटिलनाम जटाकोंधारण किये जो तपस्वी तेहसबको सरिसनाम तुल्य अर्थात् एकदृष्टिकरिके पालनकरिबेको स्वभावजाकोऐसीजो आप हेगंगामहारानी तेहतें तुलसी प्रार्थनाकरतहैं कि हेमाता तुम्हारे किनारे २ श्रीरामजू को स्मरणकरत बिचरतनाम फिरत रहौं ऐसोमति देहिनाम देव कैसीआपहौ मोहजो अज्ञान रूप महिषासुर ताकेनाश करबेकीं साक्षात् कालिका रूप॥ १७॥

मू०। जयतिजयसुरसरीजगदखिलपावनी। विष्णुपदकंजमकरंद
इव अंबुबरबहसिदुखदहसि अघवृन्द बिद्राविनी। मिलित
जलपात्रअजयुक्तहरिचरणरज विरजवरवारित्रिपुरारिसिर
धामिनी। जन्हुकन्याधन्यपुण्यकृतसगरसुतभूधर द्रोणिबिहर-
रणिबहुनामिनी। यक्षगन्धर्व मुनि किन्नरो रगदनुज मनुज
मज्जहिंसुकृतपुञ्जयुत कामिनी। स्वर्गसोपान विज्ञानज्ञान
प्रदेमोहमदमदनपाथोजहिमयामिनी। हरितगंभीर बानी

रदुऊंतीरवरमध्यधारा विशदविश्वअभिरामिनी। नील पर्यंककृतशयनसर्पेशजनुसहससीसावली श्रोतसुर स्वामिनी। अमितमहिमाअमितरूप भूपावली मुकटमणिवंद्य त्रैलोक्य पथगामिनी। देहिरघुबीरपदप्रीतिनिर्भर मातुदासतुलसि त्रासहरणिभवभामिनी ॥ १८ ॥

टी०। अखिल जगतको पवित्र कर्तजो आप हेगंगेसो जय को प्राप्त हो विष्णुको चरणरूप जो कमल ताको मकरन्द जोरसतेहकी नाईं अम्बु जोजलश्रेष्ठ ताको बहसि नाम धारण करति हौ जीवन्ह के दुख ताको दहसि नाम जरावति हौ अघजो पापवृन्द नाम समूह ताको बिद्राविनी नाम विशेष करि भगानेवाली अज जो ब्रह्मा ताको पात्र जो कमण्डल तामें मिलित नाममिलरहति हौ फेर श्रीहरि के चरणको जो रजनाम धूली तेहते युक्त हौ विरजनाम बिगतभयो है रजोगुण जाते ऐसोजो श्रेष्ठ जल अर्थात् रजोगुण तमोगुणते रहित शुद्ध तमोगुण रूपहै जल जाको शिव जीको जो मस्तक तामें धामिनी नाम किया है गृहजाने धन्य तथा पवित्र कियेहौ सगरंपुत्रन्हको भूधर जोपर्वत तेहकाद्रोणि नाम कन्दरा ताको बिदरनिनाम विदीर्ण करतिहौ अर्थात् जहां जहां धारा पातहोत है तहां तहां पर्वतन्ह विषैं जो कन्दरादि स्थान ताकोचूर्णकरतिहौ बहुतहै नाम जाको यक्षादिजोमज्जहिं नाम स्नानकरतेहैं तथा कामिनी नाम तिन्ह सबन्हकीस्त्रीसबसों सुकृतजोपुण्य ताको पुञ्जजो समूह युतनाम युक्तहैं अर्थात् जोस्त्री पुरुष बहु पुण्यमान है सोई स्नानकरत हैं स्वर्गकी सोपान नाम सीढ़ीहौ विज्ञान जो अनुभवज्ञान जो शास्त्रते उत्पन्न तेहदोऊको प्रदेनाम देनेवाली हो मोह औ मद जो गर्व मदन जो कामदेव सोई सब पाथोज नाम कमल भये तेहके नाशकरवे को हिम यामिनी नाम पाला की रात्रि अर्थात् हिम ऋतु की रात्रिहौ हरित जो हरागंभीर जो सघनवा नीरज जो बेंतसो दोनोंकिनारेपर लग्यो है ताके मध्यमें जो श्रेष्ठ धारा बिशदनाम उज्वल समस्त विश्वको अभिरामिनी नाम रमणीय अगिले तुकते पूर्वोक्त अर्थकोदृष्टांत देतहैं नीलपर्यंक नाम पूर्वजो कहे दोनोंकिनारेपर बेंत सोईश्याम पलंगभयो कृतशयन सर्पेशनाम पूर्वजोकहे उज्वल धारा सोईभयो शेषनाग सो कियोहै शयन जनुनाम जैसे अर्थात्

दोनों किनारे को शोभित सोई श्याम पलंगताके मध्यमें जो धारा सो शेषनागतुल्य पलंगपर सोयो है सहससी सावली नासहजार मस्तककी समूह शेषजू को है सोई हां सुरस्वामिनी नाम देवतनकी स्वामिनीजोश्रीगंगा ताको श्वेतनाम धार अर्थात् गंगासागर जो स्रोतहांसमुद्रविषैं प्रथममिलबेके समयहजार धारहै करिमिली हैं सोईशेषको हजार मस्तकभयो एहरूपकहे असंख्य है महिमा जाकी बहुत है रूपजाको भूपजो राजातेहकी अवली जो समूह तेहसवन्ह को मुकुटको जो मणि तेहकरिके बंद्यनाम बन्दनीय तीनोंलोक में तीनधारा करिकै गमनकियो है जाने ऐसीजो आप हेमाता सो श्री रामजूके चरण विषैं तुलसी की प्रीति देव कैसीप्रीति निर्भर नाम अतिशय अन्यत स्पष्ट है ॥ १८ ॥

मू०। हरणिपापत्रिविधिताप सुमिरतसुरसरित। बिलसति महिकल्पबेलिमुदमनोरथ फरित। सोहति शशिधवलधार सुधासलिलभरित। बिमलतरतरंगलसतरघुवरकेसेचरित। तोबिनुजगदम्बगंगकलियुगकाकरित। घोरभवअपारसिन्धु तुलसी कैसेतरित॥ १९ ॥

टी०। त्रिविधिजोताप याको अर्थपूर्व लिखे हैं तथा त्रिबिधि जोपाप कायिक बाचिक मानसिक ताको स्मरण करतमात्र सुर सरित जो देवनदी गंगाजू सो हरणिनाम नाशकरति है विशेष शोभित है पृथ्वीविषैं कल्पबेलि नाम कल्पवृक्षकी लतारूप मुदजो आनन्द अन्य जो नानामनको अर्थ सोई फल फरेहैं सुधाजो अमृत तद्रूप जोजल तेहते भरितनाम पूर्णचन्द्रमा समान उज्वल धारा बिमलतर नाम अतिशय जो तरङ्गनाम लहरि शोभित है कैसो निर्मलहै तहां दृष्टान्त देतहैं श्रीरघुवर के चरित समान शब्दार्थ सुलभहै भाव ऐसोहै कि श्रीगंगाजूतें गोसाईं कहतहैं कि आप पृथ्वीमें नहीहे तो तो यहकलिकानाम कुत्सित करतो अर्थात् जगतको नरकरूप करत फेरकहतहैं कि ज्ञानभक्ति वैराग्यसाधन करके युक्तजो पुरुष सोसंसारको पारहोत हैं होंयगे परितुलसी ऐसेजो जीव सो हे मातः कैसे तरते अर्थात् हमऐसे जीवन को कल्याण काहू प्रकारतें न होत यह भाव है ॥ १९ ॥

मू०। ईशशीश बसतिचिपथलशशि नभपताल धरणि। मुनिसुर नरनागसिद्ध सुजनमङ्गलकरणि। देखतदुखदोष दुरितदाह

दरिद दरणि। सगर सुचन सासतिसमनि जलनिधि जल भरणि। महिमाको अवधि करसि बहुबिधि हरि हरणि। तुलसीकरबाणि विमल विमलबारि बरणि॥ २०॥

टी०। स्पष्ट है दरसन मात्रतें दुखदोष दुरित जो पापदाहजो चयताप तथा दरिद्रता यह सबको दरनि नाम नाश करति हौ सगरके पुत्रनको सासति नाम क्लेश तेहकोसमनि नामदूरकरने वाली अर्थात् कपिलदेवजीके शापतें जलेजो सगरके पुत्र सवनरकादि दुःख को भोग करत हैं ताको सद्गति दैकरि सुखी किये यह अर्थ है जलनिधि जोसमुद्र ताको अपने जलकरिके भरनिनाम भरतिहौ महिमाकी अवधिकरसिनाम करतिहौ ब्रह्माविष्णु शिव को अर्थात् ब्रह्मकमण्डलो नाम करि ब्रह्मा जी की महिमा भयो विष्णुपदी नामते भगवान को महिमा शिवजटा विहारिणीहोकरि शिवजूको महिमादिये याको यहभाव भयो कि केवल श्री गङ्गाजू के संबन्धकरि त्रिदेवको महिमा अधिक करि वेदगावे है प्रार्थना करतहैं कि तुलसीके बाणीको हेमातः निर्मलकल कैसो निर्मलबारि बरनिनाम तुम्ह रै जलको बरणहै नामो अर्थात् उज्वल निर्मल जैसो जल तैसे मोरे बानी को शुद्धकरो जेहतें भगवान् के यशको गावें यह भाव है॥ २०॥

मू०। यमुनाज्यौंज्यौंलागीबाढ़न। त्यौंत्यौंसुकृतसुभटकलि भूपहि निदरिलगेभुजकाढ़न। ज्यौंज्यौंजलमलीनत्यौंत्यौंयमगणसुख मलीनहै आढ़न। तुलसिदासजगदघजवास ज्यौं अनघमेघ लागेडाढ़न॥ २१॥

टी०। बर्षाकालकोपायकरि जैसेजैसे यमुना बढ़न लागी तैसे तैसेसुकृतजो पुण्य सोभयो सुभटनाम सुन्दरवीर सोकलिकाल रूपजो राजाअधर्मको रूप ताकोबांहपकरि निकालनेलगे अर्थात् यमुनाकेदर्शनभये पुण्यकीवृद्धि पापकोक्षय होतहै यहभावहै दूसरी उत्प्रेक्षा करे हैं जैसजैसे बर्षा के जलकरि जल मलीन भयो तैसे तैसे दूतन्हको सुखमलीनहोतभयो अर्थात् जलको मलीनता यम दूतन्ह के सुखमें जातभयो है आढ़न नाम यमुना के प्रभावकरि यमदूत सबकहीं आड़नहींपावतहैं अर्थात् रहि न सकतहैंतुलसी दास कहैंहैं जगतको अघजो पाप सोजवास नाम होतुआ ताको यमुनाके प्रभावतें अनघनाम पापरहित जो धर्म्मसोईमेघरूप जला

बनमागे याको यह भाव है कि जलावनो अग्निको धर्म है सो अग्निरूप जेठ बैशाखके महीनासो जवास बढ़त है औ हरित होत है शीतल जो मेघतेहके आगमनसो जलिजात है तैसे अग्निरूप जो कलिकाल ताको पायकरि पापरूप जो जवास सो अधिक बढ़तभयो यमुना के जलके वृद्धिकरि जो मेघरूप शीतल पुण्यको वृद्धि सो पापरूप जवासको जलावत भयो यह अर्थ है २१ ॥

मू० । सेइयेसहितसनेहदेहभरिकामधेनुकलिकाशी । शमनिशोक
सन्तापपापरुजसकलसुमङ्गलराशी । मरयादाचहुंओरचरण
बरसेवतसुरपुरबासी । तीरथसबशुभअङ्गरोमशिवलिंग अ-
मितअविनाशी । अन्तरअयनअयनभलथनफलबच्छवेद वि-
श्वासी । गलकम्बलबरुणाबिभातिजनुलूमलसतिसरितासी
दण्डपाणिभैरवविशाणमलरुचिखलगणभयदासी । लोलदि-
नेशत्रिलोचनलोचनकरणघण्टघण्टासी । मणिकर्णिकाबदन
शशिसुन्दरसुरसरिसुखमासी । स्वारथपरमारथपरिपूरण
पञ्चकोशमहिमासी । विश्वनाथपालककृपालचित लालति
नितगिरिजासी । सिद्धिशचीशारदपूजहिंमनजोगवत रह-
तिरमासी । पञ्चाक्षरीप्राणमुदमाधवगव्यसु पञ्चनदासी ।
ब्रह्मजीवसमरामनामदोउ आखरविश्वविकाशी । चारितु
चरतिकरमकुकरमकरि मरतजीवगणघासी । लहत परम
पदपयपावनजेहिचहत प्रपञ्च उदासी । कहतपुराणरची
केशवनिजकरकरतूतकलासी । तुलसीबसिहरपुरीरामजपु
जोभयोचहैसुपासी ॥ २२ ॥

टी० । कामधेनु रूप जो कलिकालमें काशी ताको प्रीति सहित सेवन करु यह अपने मनको उपदेश करत हैं देह भरि नाम आयुर्बल पर्यन्त कैसी काशी है शोकादिको शमन करे है सर्व मङ्गलकी राशि है कामधेनुको रूपक करत हैं गायको चारि पांव होय है इहां मर्य्यादा जो चहुंओर नाम चारों दिशा की सीवां सोई काशीरूपकामधेनु के चारों चरण श्रेष्ठ है कामधेनुको देवता सेवन करत हैं इहां पुरवासी सोई देवता रूप सेवन करत हैं तीरथ सबशुभअङ्गनाम गायको और सब अङ्ग होय है इहांकाशी बिषै मुख्य जो तीर्थ जाके मुख्यगाय के अङ्गन्हतें रूपककरि कहेंगे ते इतें भिन्न जो सामान्य तीर्थ है ताकों सामान्य अंगन्हमें जो

जनाये हैं गायकों रोम होय है इहां विनाश रहित असंख्य जो शिवलिंग सोई रोमभयो गायको घरहोयहै काशीरूपी गायकों घ्यतर अयननाम जो अन्तर गृही सोई अयन नाम गृह गायकों चारि स्तनहोयहैं इहां अर्थ धर्म काममोक्ष जो फल सोई चारों स्तन तुल्यभये गायकों बछरूहोयहै इहांवेदके वचनमें जो विश्वास करता सोई बछरूहै अर्थात् बछरूतें गाय पन्हायकरि दूधदेति है तैसे वेदके वचन में जो विश्वास तेइ बछरूते काशीरूपी गाय भगवत्प्राप्ति रूपदूध देतहै गायकों गलकंबल नाम लोरि होति है यह गायकों वरुणा जो नदी सोई लोरि सम शोभति है गाय के पूंछ होतिहै इहां असी जो नदी सोई जैसे लूमनाम पूंछ है गायकों दो सींगहोतहैं इहां दण्डपाणि तथा भैरवजु यही दोऊ सींगरूपहैं पापी जीवन्हकों भयकरता गायकों मल होयहै इहां पुण्यवान जनन्हकी जो रुचि सोई पवित्र गोबर है कामधेनु असुरन्हकों भय देतहै इहां खलनके समूह जोताकों काशीरूपी गाय भयदेत है यहांखलगनकी जो रुचि सोई मलतुल्यभयो भयदासी नामपूर्व जो कहे दो सींगतेहकरके पापिनको भयदेतिहैं भयदासी पद मलको विशेषण नहीं किये सो यह हेतुतें कि गायको मल जो गोबर सो पवित्र होयहै ताकों भयदेनो युक्त नहीं होत यह हेतुतें भयदासी पदगायको विशेषण किये पहिले अर्थ सोतो संदेहनहीं है गायकों दो आंखिहोय हैं इहां लोल दिनेशजो लोलार्क तथा त्रिलोचन जो तीर्थ सोई दोनों आंखिहैं गायकों घंटा होतिहै इहां करनघंटा जो तीर्थ सोई घण्टारूप है गायके सुख होत है इहां मणिकर्णिका जो तीर्थ सोई सुख चन्द्रमा समान शोभेहै गायके अन्तःकरण सोसुखरहत है तथा बाह्यशोभा देखि परतहै इहां सुरसरि जो गंगा जू सोई सुखरूप बसति हैं तथा सुखमानाम परम शोभासमान देखपरतहैं गायको महिमाहोय है इहां स्वार्थ जो अर्थ धर्म काम तथा परमार्थ जो मोक्ष तेइ करिके परिपूर्ण जो पञ्च क्रोश तीर्थ सोई है महिमा काशीरूप गायकों गायकों चरवाहा पालक रहत है इहां विश्वनाथ जो शिवजू सोई पालतहैं कैसे चरवाहे हैं कृपाल है चित्त जाको फेर चरवाहा जबगायकों घर लैआवतहै तब वाकेघरकी स्त्री गायकों पोंछति प्रसन्न करतिहै इहां गिरिजाजो पार्वतीजू सोंनितवास-

ति नाम रोजरोज दुजारतिहैं कामधेनुकों देव स्त्री सब पूजतिहैं तैसे इहां भी अष्टसिद्धि शचीनाम इन्द्राणी शारद जो सरस्वती सो पूजति हैं तथा कामधेनु के मनकों औ द्वितीय जो काशीरूप कामधेनु ताकेमनकों रमासीनाम लक्ष्मी ऐसी त्रैलोक्यस्वामिनी सो जोगवतिरहतिहैं अर्थात् सर्वथा मनके अभिलाषको राखति हैं गायको प्राण है इहां पञ्चाक्षरीनाम जो पञ्चअक्षर को मंत्र नमःशिवाय सोई प्राण समान अपान उदान व्यान पञ्चवायु भयो गायके अन्तःकरण मो आनन्द रहतहै यह गायविषे बेनीमाधवजू मुदनाम आनन्दरूप हैं गायमों पञ्चगव्य होतहै यह गायकों पञ्चनदा जो तीर्थ सोई गोबर मूत्र दूधदही घीव पञ्चगव्य रूप है सबभूतके हृदयमो जीवब्रह्मरहतहैं तथाकामधेनुकों जो शरीर ताह्लमों ब्रह्मजीवको निवास यह गायविषै रकार मकार जो दोऊ अक्षर सोई जीव ब्रह्मरूप बास करत है समस्त विश्व जो संसार ताकों जैसे जीव ब्रह्म तथा रकार मकार विशोकानाम विशेष तें प्रकाशकरतहै गायघासुचरैहै यह गायकों चरितु नाम चरबेको बस्तुसो कर्मजो शुभकर्म कुकर्मजो निषेधकर्म तेह कर्मनकों करिके मरत हैं जो जोव समूह सोई कर्मवाशी नाम घासरूप चरति नाम खाति है अर्थात् शुभकर्म करि उत्तम कुलकी प्राप्ति निषेध कर्मकरि कुयोनिकी प्राप्ति यह शास्त्रको सम्मत है सो गर्भवास को हेतु शुभ अशुभ दोऊकर्मरूप जो घासताकों काशीरूपीगाय खायलेति है जेहतें फेर गर्भवास नहीं होत घासकों जब गाय चरतिहै तबटप्तहोकरि दूधदेतिहै इहां काशीरूपी गाय शुभाशुभ कर्मरूप घासकों भक्षणकरि टप्तह्वै भगवत्पद प्राप्तिरूपी दूध देतिहै जो कोउजीव यह गायकी सेवन करतहै सो लहत नाम पावतहै परमपद जो मोक्ष सोई पवित्र दूध रूपभयो जेहिनाम जाको चाहत हैं प्रपंच उदासी नाम प्रपंचरूप संसार तेहतें जो महात्मा उदासीनहैं अर्थात्ब्रह्माकेप्रपंचको टणवत्त्यागकियेहैं जो सोजेहपरमपदको सर्वथाप्रार्थना करतहैं वाकी प्राप्तितौबड़ेभाग्य करि भगवत् अनुग्रहतें होतहै ऐसो दुर्लभ जो भगवत्पद प्राप्ति रूपोदूधताकों काशीरूपी कामधेनु सामान्य जीवसर्बसाधनहीन जो सेवन करतहैं ताको देतिहै यह अर्थहै अष्टादश पुराण कहत हैं कि काशीरूपी कामधेनुकों रच्योहै केशव नाम बिंदु माधवजू

भगवान् अपने हाथनकी करणीके कलासमान अर्थात् भगवान्के हाथनको जितनी निपुनाई तद्रूप सोकाशीरूपी गाय म्रत्युलोक विषै शोभित ऐसी जो शिवजूकी पुरी ताेमों निवासकरि श्रीराम जूकों प्रभु जो सुपासी नाम निकट बासी भयौ चाहैहै यह उपदेश गोसाइं अपने मनकों देतहैं ॥ २२ ॥

मू०। सबसोचबिमोचनचित्रकूट। कलिहरणकरणकल्याणकूट। सुचिअवनिसुहावनिआलबाल। काननबिचित्रबारीबिशाल। मन्दाकिनिमालिनि सदासींच। बरबारि बिषमनरनारिनीच। शाखासुशृंग भूरुहसुपात। निरझर मधुवरम्रदुमलयवात। शुकपिकमधुकरमुनिवरविहार। साधनप्रसूनफलचारिचारु। भवघोर घामहरसुखदछांह। थप्योथिरप्रभाउजानकीनाह। साधकसुपथिकबड़े भागपाइ। पावतअनेकअभिमतअघाइ। रसएकरहितगुणकर्मकाल। सियराम लषनपालककृपाल। तुलसी जोरामपद चहियप्रेम। सेइय गिरिकरि निरुपाधि नेम ॥ २३ ॥

टी०। सबसोच कों छोड़ावने वाला जो चित्र कूट कलिकाल जो दुस्तरकाल ताकों हरणकरत है औ समस्त जो कल्याणता के करवे कोकूटनाम टच्छरूप है जो कूटवर्णन किये तौ याला चहिये इहां पवित्र जो ष्टथ्वी सोशोभायमान सोई आलबाल नामथाला है अपूर्व जोकोकूट होत है सो बाटिका मों लगायो जात है इहां चित्रकूटके चतुर्दिश जो बन आश्चर्य बड़ोसोई बारीनाम बाटिका भयो ताकेमध्यमो चित्रकूटपर्वतरूप जोकूट सोलाग्यौहै जब बाटिका भयो तो सींचन वाला चहिये सो मन्दाकिनि रूप जो मालिनि सोई अपने जलकरि सर्वथा सींचैहै कूटसहित बाटिका को कूटको रक्षाकरवे कों घरान चहिये इहां विषम जो कठिन स्त्री पुरुष नीचकोल भीलादि सोई बरबारि नाम श्रेष्ठपद इहां अगम्यताचकहै यहां यद्यपि जातिकरि नीचहै तथापि चित्रकूटके निवासके सम्बन्ध करि श्रेष्ठ कहतहैं यहभाव है जो कूटकहे तब वाको सब रूपक कहनो चाहिये सोदेखावत हैं सुन्दर जो शृंग सोई शाखा नाम डारहैं औरपर्वत के ऊपर भूरुह नाम जो टच्छ सोई सुन्दर पातहैं टच्छसों मधुलगे इहा निर्झर जो झरना सोई श्रेष्ठमधुचुवत है टच्छ कोमल तथा सुगन्धि होतहै इहां सुगन्ध जो वायु बहत है

सोई कोमलता सुगन्धता है यहां वृक्ष के आश्रय करि मृदुनाम
मन्दमलय नाम सुगन्ध तथा शीतल वायु बहत है सो इहां सर्व
कालिक त्रिविधिवायु निवासकिये जो जीव सब ताको सुखीकरत
है वृक्षके ऊपर पक्षी सब रहत हैं इहां श्रेष्ठ जो मुनि सब सोई
सुवा पपीहा भ्रमररूप विहार करतहैं वृक्षको फल फूल होत है
इहांमुनि सब योग जपादि साधन जो करतहैं सोई प्रसून नाम
फूल सर्वकाल फूल्यो रहतहै तथा अर्थ धर्म कामसोक्षजो चारों
सोई चारुनाम सुन्दर फल फलतहै वृक्षरूपको तापको छुड़ावत है
यह जो वृक्षसो संसार को जो क्लेश सोई घाम भयो ताको हर
नाम हरण करेहै सुखदेनेवाली जो छाया तेहकरिकै यह चित्र-
कूट वृक्षको प्रभावतो अनादिसिद्धि तथापि श्रीरघुनाथजूनिवास
करि याके प्रभाव को थिर थप्यो नाम स्थिर करि स्थापित किये
अर्थात् काहू कालमो श्रीरघुवर कृपाकरिकै याके प्रभावको नाश
नहीं वृक्षकेछायामो राहागीर बैठतहैं इहां साधकजो अर्थधर्म
काम मोक्षकेनिमित्त नानासाधनकरतहैं सोई सुन्दर राहागीर
भये सो बड़ेभाग्यतें एकवृक्षके छायाको पावैहैं कल्पवृक्षको प्रभाव
जनावत हैं जो पुरुष याके छायाको प्राप्तभयेसो अनेक अभिमत
नाम वांछित अर्थको अघाय नाम तृप्त होकरि पावत हैं वृक्षको
छाया सर्वदा एकरूप नहीं रहत है यह चित्रकूट रूप वृक्ष भूत
भविष्य वर्तमान तीनोंकालमो एकरस रहतहै एकरस रहबेमो
हेतु कहत हैं गुण जो रजोगुणादि कर्म जो शुभ अशुभ कालजो
सत्ययुगादि तेहकरिकै रहित है अर्थात् जौने गुणको जब उदय
होतहै तैसोई फलकी प्राप्ति होतिहै तथा गुणके अनुहारिस्वभाव
होतहै सो यह वृक्षको सेवन कर्ताको गुण कृत विषमता नहींतथा
शुभ अशुभ कर्म अवश्य भोक्तव्यहै सो कैसऊ अशुभकर्म कियेहोय
यह वृक्षके अवलंब लियेतें तेहकर्मन्हको नाश होत है याते कर्म
की प्रबलता नहींतथा कालके आधीन शुभजीव सुखदुखको भोग
करतहैं यह वृक्षके आश्रयीको सर्व काल सो राम राज्यको सुख
रहत है एकअर्थ है वृक्षको जो लगावतहै औ पालनकरतहै यह
वृक्षको श्री जानकीजू श्रीरामजू कृपालपालक हैं गोसाईं अपने
मनको शिक्षाकरत हैं कि जो श्रीरघुवर चरणकमल प्रेमचाहे है
तो यहएक पर्वतरूप जो वृक्षताको निरुपाधि नाम अंतर रहित

नेमकरिके सेवनकार अर्थात् शरीर त्याग पर्यन्त चित्रकूटकों त्याग न करना यहीनेमकरि मरणपर्यन्त सेवनो यह भाव है २३ ॥

मू०। अब चित चेतिचित्रकूटहि चलु। कोपितकलि लोपितमंगल मगविलसतबढ़त मोहमायामलु। भूमि विलोकि रामपद अंकितबन विलोकि रघुबरविहारथलु। शैलशृङ्गभवभङ्गहेतु लखुदलनकपटपाखंडदंभदलु। जहंजनमेजगजनकजगतपति विधिहरिहर परिहरि प्रपंचछलु। सुकृत प्रवेशकरतजेहि आश्रमविगतविषादभयोपारथनलु। नकरुविलंबविचारुचारु मतिबरषपाछिले समअगिलोपलु। मंत्रसोजाइ जपहिं जो जपतभैं अजरअमरहरअचइ हलाहलु। रामनामजपजाग-करतनितमज्जत पयपावन पीवतजलु। करिहैं रामभावतो मनको सुखसाधनअनयास महाफलु। कामदमणिकामता कल्पतरु सोयुगयुग जागतजगतीतलु। तुलसीतोहि विशेष बूझियएकप्रतीतिप्रीतिएकैबलु ॥ २४ ॥

टी०। अपने चितते कहतहैं किरेचित अब चेतिकरि चित्रकूट कों चल कोपित नामकोंप युक्तजो कलिकाल तेहिकरिके लोपित नाम गुप्त भयो मङ्गल को मगु नाम मङ्गल को मारग ज्ञान भक्ति वैराग्यादि तेहिके विपर्यय विशेषकरि सोभतहै तथा बढ़तहै मोह मायामलु नाम पापसमूह जगतविषैं यहीचेतिकरि चित्रकूट कों चलु अर्थात् चित्रकूट विषै कलिकालिको प्राबल्यनही काहे नहीं सो अगिले तुकतेंकहतहैं जेहिचित्रकूटकी पृथ्वीश्रीरामजूके पदतें अंकितनाम चिन्हितताको देखत तथारघुबरके विहारकोथलुनाम स्थानजो बन ताको अवलोकन करु पर्वत को जो शृङ्गसो संसार के नाशका हेतुहै ताको लखुकैर कैसो शैलहै नाशकरैहैं कपटपाखंड दंभताको दलुनाम फौज अर्थात् समूह उदारपद मैचीके वाहेहै इहांकपट नामऊपर प्रीतिकरना अंतःकरणतें वाकोहानिविचा-रनो पाखंडनाम अंतःकरणसों संसारविषै अनुराग बाहर पूजा पाठादि आडंबर बहुत करनो दंभनाम और को उत्कर्षता देखि ईर्षाकरनो अर्थात् नहीं सहनो यह अर्थहै जेहिचित्रकूटविषैं जन्म लियेहैं जगतके जनकनाम पिता तथा जगतके स्वामी ब्रह्माजू श्री भगवानशिवजू अर्थात् अत्रिमुनिके तपस्या तें प्रसन्नहोकरि अन-सूया जू विषै ब्रह्माजूके अंशतें सोमजो चन्द्रमा भगवान् के अंशते

दत्तात्रेयजू शिवजूके अंशतें दुर्वासाजू उत्पन्नभये छोड़िकरिकै प्रपंच नामसंसार ताको छलनाम व्यापार अर्थात् उत्पत्ति पालनसंहार रूप जो कर्मछलपद यह निमित्त दिये कि पालन जो अपनो धर्म तेहके रक्षा निमित्त छलकरि इन्द्राको व्रतटारै तथा अपने ऐश्वर्य को गुप्तकरि मनुष्यादि जनमग्रहणकरनो ऐसेअनन्त प्रसंगहैं तैसे ब्रह्माजू देवतन्हके अर्थ सरस्वतीको प्रेरणाकरि कुंभकरणकी बुद्धि को फेरीतब पश्चात् बरदिये तथा दैत्यदानव देवतासम ब्रह्माकेपुत्र नातीपनाती हैं सो देवतनके प्रीतिकरि भगवान तें प्रार्थनाकरि औतारादि आविर्भाव कराय असुरन्ह कों वार वार नाशकराय दिये ऐसे अनेक कथापुराणविषै प्रसिद्धहैं तथा शिवजूमालीसुमा-लीआदि लेकरि जो दैत्यगण ताकों प्रथम कृपाकरि बरदानदिये पश्चात् देवतनतें कहै की हमताको बरदान दिये हैं यहतें नहीं मारिसकते तुमसब भगवानको प्रार्थनाकरो भगवान आविर्भाव होकरि इनसबन्हको बधकरेंगे यह कथा बालमीक रामायणमें प्रसिद्धहै ऐसेअनेक प्रसंगहैं यह अर्थ है सुकृतनाम एकबार प्रवेश करतसंते जेहिआश्रम नामजेहि चित्रकूट स्थानमें विशेषकरिनष्ट भयो है विषाद पारथ नाम युधिष्ठिरादि कों तथा राजा नलको अर्थात् दुर्योधनतें जबबैर भयो तबपांडव प्रथम चित्रकूटमें आयकरि कामतानाथको पूजनकरि तथा जयभये पीछेफेरि पूजनकरेंगे ऐसो संकल्पकरि संग्राम आरंभ करतभये यह प्रभावतें जयभयो तथा नलकोजब राज्यछूट्यो तब चित्रकूटमें आयकरि श्रीकामतानाथ को पूजनकरि कछु काल बास किये तेहके प्रभावकरि फेर अपनेराज्यको प्राप्तभयो यहकथा चित्रकूट माहात्म्यमें विस्तार है चित्रकूटको चलनोरूप जो कार्य तामेंदेर मतिकरु सुन्दर बुद्धितें विचारुपाछिले जो बरषमें अगिलै पलसमान हैं याको यह भाव किआगे आवनेवाली जो एकपल औ वितीतभयो जो एकवर्षसो तुल्यप्रतीत होतहै अर्थात् वितीतकाल बहुतसो किंचित भासैहै आवनेवाली जो किंचित कालसो विशेषप्रतीत होतहै सोगोसांई कहतहैं कि ऐसो न बूझनो चाहिये यह दृष्टी अज्ञ जीवन्ह का है विवेकी जीवतोऐसो बूझैहैकि जैसे नश्वरकाल पीछें शीघ्र व्यतीत भयोतैसे आवने वालो जो काल अर्थात् बाकी जो आयुर्बल सोऊ नश्वर हैव्यतीत होते नदेर होयगोयह बूझिकरि अपने कल्याणके

अथशीघ्र यत्नकरनो यहभाव है यहां व्यतीतभयो जोवर्ष भगवत विमुखहोकरि औ अगिलो जोएक पलजामें भगवत सन्मुख होय सो दोऊ सम नाम तुल्यहैं किन्तु तहां कालकरि लगायना अर्थात् जेहक्षन में भगवान के सन्मुखजीव होत है तेह क्षनके तुल्य भगवत विमुख होकरि व्यतीत जो बहुत बर्षको कालसो नहीं होत यह अर्थहै यहां जितनी आयुर्बल व्यतीत भईताकोवर्ष तुल्य अर्थात् बहुतकाल बूझनो आवने वालो जोकाल अर्थात् बाकी जो आयुर्बल ताकों पल समान बूझनो विवेकिन्हको सम्मतहै चित्रकूट में जाकरि कहा करनो सो कहे हैं सो मंत्र जायकरि जपु जेहको जपकरत संते अजर नाम जरा रहित तथा मरण रहित हरजो शिवजू सोभै नाम होतभये हलाहलु जो महाविष सोअचइ नाम पान करिके अर्थात् जेह विषतें मरण होतहै सो महाविष राम नामके प्रभावतें अमृत को फलदेतभयो यह भावहै रामनाम को जपरूपी जो यज्ञ सो रोज २ करते तथा मज्जन नाम स्नान करते पयनाम पयस्विनी विशेतेह पवित्रजलको पीवते श्रीरामजू अवश्य मनको भावतो करेंगे साधंतो सुखरूप औ महा फल अनयास नाम परिश्रम रहित पावनो अर्थात् मन को बांछा सिद्धि होनो यह महान दुर्लभ फलहै सो बेपरिश्रम सुखकरिके जो साधन थो रामनाम कहनो स्नानमात्र करनो अमृततुल्य जलपीनो यह जो नित्यकीं कर्त्तब्यता अत्यन्त सुलभ याही कर्त्तब्यतातें अनेकतपस्या योगादिकरि जो बांछितफलनहीं मिलतसो प्राप्तहोतहै यह अर्थ है कामतानाथ जो पर्वत सो कामदमणि नाम चिन्तामणि तथा कल्पवृक्षरूप बांछित फलदेतहै सो चिन्तामणि कल्पवृक्षइन्द्रलोक मेंरहतहै यह कामतारूपचिन्तामणि कल्पवृक्ष युग २ में जागत नाम प्रकाशितहै जगतीतल नामपृथ्वीमें ऐसोचित्रकूटको प्रभाव सबको बूझनो उचित है पर तुलसी तोकोतो विशेषकरि ऐसोई बूझिये नामबूझनोचाहिये तथा यही एकजो कामतानाथ तासो प्रीतिकर अवश्य कामतानाथ श्री रामजू को प्राप्त करेंगे तथा प्रीतिकर एक बलनाम याहीको अपनोबल बूझ यहअर्थ है २४॥

मू०। जयति अंजनीगर्भ अंबोधिसंभूत बिधु बिबुध कुलकैरवानन्द कारी। केशरीचारुलोचन चकोरकसुखद लोक गणशोक सन्तापहारी। जयतिजयबाल कपिकेलिकौतुकउदित चण्ड

करमगडलंग्रामकर्त्ता। राङ्करविश्वक्रमविगर्भखर्बीकरणघारण भयहरण जयभुवन भर्त्ता। जयतिरणधीर रघुवीर हितदेव मणिरुद्रअवतारसंसारपाता। विप्रसुर सिद्धिमुनिआशिषाकारबपुषविमलगुणबुद्धिबारिधविधाता। जयतिसुग्रीव रिच्छादिरक्षणनिपुणब।लिबलशालिबधमुख्य हेतू। जलधिलंघनसिंहसिंहिक।मदमथनरजनिचरनगरउत्पातकेतू। जयति भनन्दिनीशो।चमोचनविपिन दलनघननादबश विगतशंका। लूमलीलानलज्वालमालाकुलितहोलिकाकरणलंकेशलंका। जयतिसौमित्ररघुनन्दनानन्द कररिच्छकपिकटकसंघटविधाई। बद्धबारिधसेतुअमर मङ्गलहेतुभानुकुलकेतुरणविजय दाई। जयतिजयवज्रतनुदशननखमुखविकटचरुभुजदरुडतरुशैलपानी। समरतैलिकजंचतिलतमीचरनिकरपरिडारसुभटघालिघानी। जयति दशकण्ठघटकरण बारिदनादकदनकारणकालनेमिहन्ता। अघटघटनासुघटविघटनविकटभूमिपातालजलगगनगन्ता। जयतिविश्वविख्यातबानैतविरुदावलीविदुषबरणतवेदविमलबानी। दासतुलसीपाससमनसीतारमनसङ्गशोभितरामराजधानी॥ २५॥

टी०। महाबीरजूको वर्णन करतहैं भक्तराज जो श्रीमहावीर जैको प्राप्त होहिं कैसे हैं अंजनी को जो गर्भ सोई समुद्र तातें अभूत नाऊ उत्पन्न विधु नाम चन्द्रमा रूप चन्द्रमा कोई यशको प्रकाशकरैंहैं महावीररूप जो चन्द्रमा सोई देवन्ह को कुल नाम समूह सोई कैरव नाम कुई समान भये ताको आनन्द कर्त्ता अर्थात् राक्षसनको बधकरि देवतन्हको आनन्द के दाता केशरी जो पिता ताको सुन्दर जो नेत्र सोई भयो चकोररूप ताको सुख देनेवाले अर्थात् चन्द्रमाको देखि जैसेचकोर सुखपावै है तथा जैसे प्रीति करि देखे है तैसे केशरी सुख पावत एकटक होकर देखत है चन्द्रमा के उदय करि समस्त जगत सुख पावत है तैसे लोक को गणजो समूह ताके शोक औ सन्ताप को महावीर रूप चन्द्रमा दूर करत है अर्थात् दुष्टन को बधकरि समस्त जगत् को सुख देत हैं बालक रूप जो महावीर ताको केलि नाम लीला कौतुक नाम खेलकार उगेऊये जो चण्डकरनाम प्रचण्डहै किरण जाको ऐसे जोसूर्य ताको जो मण्डलताके ग्रास कर्त्ता नामलीखवे

के अर्थ कूदते भये अर्थात् अत्यन्त बाल्यावस्था में अंजनी फलले आइबे को गई रही तेहि काल मे अत्यन्त जो क्षुधा तेहते आकुल भये सूर्यको उयो देखि लालफल मानिकरि ग्रासकरबे को कूदत भये ऐसे जो महावीर सो जैको प्राप्त होंय राहु सूर्य इन्द्र वज्र यह चारों कों जो गर्भ ताकों खर्ब करण नाम तुच्छ करनेवाले याको ऐसो प्रसंग है को जेहकालमें सूर्यके ग्रासकरबे कों महावीर कूदे हैं वाहीकाल मों ग्रहन को योग रह्यो राहु आयरहे हैं सूर्यके ग्राह करबेकों सो महावीरको सो तेज देखिकर सूर्यके निकटनहीं आयसके इन्द्रके इहां जाकरि कहत भये कि सूर्य चन्द्रमा हमकों भोजनके निमित्त दियरहे सो अब और कों दिये हमारी क्षुधा कैसे निटसहो यहबचन सुनि आश्चर्यमानि शीघ्र ऐरावत हाथीपर चढ़ि राहुकों आगेकरि चलतभये जहां सूर्य के निकट महावीर पहुंचेरहे तहां आवत भये इन्द्रके आगे आवते राहुको देखि कालाफल मानिकरि महावीर ग्रासकरबे को कूदे राहु तेजकों नहीं सहिसके टलि गये तब महावीर ऐरावत हाथीकों देख बड़ोफल मानिकरि ऐरावतके ग्रासकरबे कों कूदे तब इन्द्र भयकरके वज्रचलाये तेह बज्रते एक ओरकी दाढ़ी टूटी महावीर मूर्च्छित होयकरि गिरे यहकथा बाल्मीक रामायण उत्तरकाण्ड मों लिखो है याको यह भाव भयो कि अत्यन्त बाल्यअवस्थाको जो शीघ्र कूदनो ताके गतिकों देखिकरि सूर्यको अपने शीघ्रगतिको जो गर्व सो तुच्छ ह्वैगयो राहुतेजको नहीं सहिसके तातें राहुको गर्भतुच्छभयो इन्द्रकों अत्यन्त प्रभाव देखिकरि भयभयो तातें इन्द्रको गर्व तुच्छभयो जो बज्र पर्वतन्ह को नाशकिये बड़े बीरन्हकों चूर्ण किये तेहि बज्रते एक तरफकी दाढ़ी टेढ़ी भई यह हेतुतें बज्र को गर्व तुच्छ भयो यह कथातें एह पदअर्थ लगेहैं तथा श्रीमहावीरके शरण कों जो जीव प्राप्त होतहैं ताके भयकों नाशकरतहैं समस्तभुवनके भर्त्तानाम स्वामी अर्थात् सब के पूजनीय ऐसे जो महावीर सो जैको प्राप्त होहिं संग्राम मो धीर स्वभाव जाको रामजू के हितकारी अर्थात् जानकीजूको खबर लैआये औ लक्ष्मणजूको औषधि लैआयकरि प्राणदिये इत्यादि अनेक कार्यकरि हितकिये देवतन्हके मनिरूप जो रुद्र ताके अवतार संसारके पातानाम रक्षक ब्राह्मणादिको

आशिष जो आशीर्वाद ताकों आकर नाम खानिबपुष नाम शरीर जाको अर्थात् इन्द्रवज्रतें मारे श्रीमहाबीर मूर्च्छित भयेतब वायु जो महाबीरके पिता सो अत्यन्त कोपकरि समस्त जगत विषै अपनी जो गति ताकों बन्द करि देत भये समस्त जगत देवादि सहित जड़रूप ह्वैगये तेहिकाल मों इन्द्रादिक देवता ब्रह्माजूके पास जाकरि प्रार्थना करतभये तब ब्रह्माजू सब देवता मुनि सिद्धगण सहित जहां पर्वतके कन्दरामों महाबीरको गोद मों लियें वायु बैठेरहे तहां जातभये ब्रह्माजू महाबीरके मस्तक पर हाथ धरे तेहिके प्रसाद करि महाबीरजू फेर जी उठे तब पृथक् पृथक् ब्रह्मादिक जो देवता तथा मुनि सिद्धगण आशीर्वाद देतभये सो बिस्तार प्रसंग उत्तरकाण्डमेंहै यहहेतुतें महाबीर कों आशीर्वादको खानि कहै यह अर्थहै और जो निर्मल गुण क्षमा दया करुणादि तथा निर्मल जोबुद्धि ताकों विधातानाम विधान कर्ता अर्थात् बनावनेवाले सुग्रीवके मित्रादि जो मंत्र आदि पद करकेअन्य जोकार्य तथा संकटविषै रक्षा करनो तेहविषै निपुण नाम अति प्रवीन तथा बालि बलकरि कै शालि नाम सोभत ताके बधके मुख्य कारण अर्थात् श्री महाबीर के हेतु करि श्री-रामजूतें सुग्रीवकी मैत्री भई सो किष्किन्धाकाण्ड मों विदित है समुद्र के लांघने वाले साक्षात् सिंह रूप अर्थात् श्रेष्ठ सिंहिका जो राक्षसी ताके मदकों मथन कर्ता रावणके नगरविषै उत्पात के ध्वजा रूप अर्थात उत्पात कर्तन मो श्रेष्ट यहाकेतु को तारा उत्पातको हेतुहै सो लंका भरिके उत्पात करबेकों केतुके तारा समान भू जो पृथ्वी ताकी नन्दिनी नाम पुत्री जो जानकी जू ताके शोच के छोड़ावने वाले बन जो अशोकबाटिका ताके नाश कर्त्ता घननाद जो मेघनाद ताके बस भयेहूं विशेष करि नष्ट है शंका जाको अर्थात् ब्रह्मास्त्रकरि मेघनादने बांध्यो वाहूकाल मों अत्यन्त निर्भय लूम जो पूछ ताके लीला जो घूमनि तेहतें कूद्यो जो अग्नि ताके ज्वाला जो लहरि वाको मालानाम समूह तेह करिके आकुलित नाम व्याकुल जो रावणकी नगरी ताकों हो-लिका करण नाम संवत समान जलाये लक्ष्मणजू रघुनाथजू के आनन्द करनिहार भालु बानरको जो फौज ताको संघट नामटोली विधाई नाम निधान कर्त्ता बांध्यौ है समुद्र मो सेतु जाने देवतन्ह

के मङ्गलकेकारण सूर्यकुलके केतुनाम ध्वजा जो रामजू तेहकेविजय के देनेवाले अर्थात् लंकाकेजयके मुख्य हेतु बज्र समान शरीर दांत नख जाके। भयानक है मुख जाको प्रचण्ड है भुजदण्ड दोऊ हाथ मों वृक्ष औ पर्वत ताके समर जो संग्राम को पृथ्वी सोई तैलिक यंत्रनाम कोल्हू तमी जो रात्रीतामो चरनाम चलने वालेजो निशिचरके निकर नाम समूह सोई तिलभये असुरन्ह विषै जो सुभट सोई घानी समान पूर्वोक्त कोल्हू मो घालिनाम डारिकर पेरिडारे जो श्रीमहावीर यह संग्राम के स्वरूपको ध्यानहै रावण तथा घट कर्ण जोकुम्भकर्ण बारिदनाम जो मेघनाद तेह सबके कदनजो नाश ताको कारण नाम हेतु अर्थात् जो जानकीजूका खबर महावीरजू रामजूके निकट नहीं पहुंचावते तौ रावणादि को बध काहे को होतो तथा लक्ष्मणजूके प्राणकोरक्षा औषधी लेआय करि न करते तो लंकाकोजय न होतोइत्यादि अनेकहेतुहैंसो श्रीमद्रामायणादि के कथाकरि जान्यौ जात है यह हेतुन्ह कों विचारि रावणादिका बधको कारण महावीरकों कहत हैं नहीं घटबे योग्य जो घटना ताको सुनामसुलभ करि घटबांम घटावनेवाले अर्थात् समुद्र लंघनादि जो कर्म सो अत्यन्त दुर्घट ताकों सुलभतें करत भये सुघटजो सुन्दर घटिरह्यो है ताको बिघटननाम बिगाड़नेवाले अर्थात् बन्यो जो रावणादिको ऐश्वर्य सो नाशकरि देतभये विकटनाम असुरन्ह के दृष्टिमें भयांनक रूप पृथ्वी पाताल जल आकाश विषै गन्तानाम गमन कर्त्ता अर्थात् जाके गति को कहूं बाधा नहीं विश्व विषय विख्यात है बानैतनाम बीरनमों जो बानावाले अर्थात् श्रेष्ठ विरुदा बलीनाम जिसको परम्पराजाको ताकोंविदुष जो पंडित तथा वेद निर्मल बानी करि बर्णन करतहैं भक्तन के त्रासको नाशकर्त्ता श्री सीतारमनजो श्रीरामजू तेहिके मङ्गविषैं शोभितहैं राम राजधानी अयोध्या तेहविषैंसो ध्यानतुलसीके हृदयमों बसो। ॥ २५ ॥

मू०। जयतिमर्कटाधीशमृगराजविक्रममहा देव मुदमङ्गलालय कपाली। मोहमदकोहकामादिखलसंकुलाघोरसंसारनिसि किरणमाली। जयतिलसदञ्जनादितिजकपिकेशरी काश्यप प्रभवजगदार्तिहर्त्ता। लोकलोकपकोकनदशोकहरहंसहनुमानकल्याणकर्ता। जयतिसुबिशालविकरालविग्रहबज्र सार सर्वाङ्ग भुजदण्डभारी। कुलिशनखदशनवर लसतबालधि ह-

रुद्रवैरिखिन्न।अधरकुधरधारी। जयतिजानकीशोचसन्ताप मोचनरामलक्ष्मणानन्द वारिजविकाशी। कीशकौतुककेलि लूमलंकादहनकाननदलनतरुणतेजराशी। जयति पाथोधि पाषाणजलयानकरयातुधानप्रचुरहर्षहाता। दुष्टरावणकुम्भ कर्णपाकारिजितमर्मभित्कर्मपरिपाकदाता। जयति भुवनैक भूषणविभीषणवरदविहितकृतरामसंग्रामसाका। पुष्पका रूढ़सौमित्रसीतासहितभानुकुलभानुकीरतिपताका। जयति परयंत्रमंत्राभिचारग्रसनकार्मणकूटकृत्यादिहंता। शाकिनीडाकिनीपूतनाप्रेतवैतालभूत प्रमथयूथजंता। जयतिवेदान्तविधिविविधविद्याविशदवेदवेदांगविद ब्रह्मवादी। ज्ञानवैराग्यविज्ञानभाजनविभोविमलगुणगणत शुक नारदादी। जयतिकालगुणकर्ममाया मथननिश्चलज्ञानव्रत सत्यरत धर्मचारी। सिद्धसुरवृन्दयोगीन्द्रसेवितसदादासतुलसीप्रणत भयतमारी॥ २९॥

टी०। वारन्हके राजासिंह समान पराक्रम जाको तथा महादेव नाम देवतन्हसो श्रेष्ठ आनन्द मंगल के आलय नाम रहबे को स्थान अर्थात् जेहके कटाक्ष तें आनन्द मङ्गल प्राप्त होत है कपाल को धारण किये अर्थात् रुद्र रूप कामादि जो खल तेह करिके संकुला नाम संकीर्ण जो भयानक संसार सो निशि नाम राची भई ताके नाश करबे को किरण माली नाम सूर्य पूर्व सूर्य रूप कहते को रूपक करि देखावत हैं लसतनाम सोभत सूर्य रूप जो महावीर सो जयको प्राप्त होहिं अञ्जनीजो माता सोई अदितिज नाम देवमाता अदिति भई तेहतें उत्पन्नवानर जो केशरी पिता सोई कश्यप तेहितें प्रभवनाम उत्पन्न जो महावीर रूप सूर्य जगत के आर्ति जो क्लेश ताके नाश कर्ता अर्थात् सूर्य अपने उदय करि जगतके क्लेशको नाशकरतहैं तैसे महावीररूप जो सूर्य सोऊदुष्टन्ह को बधकरि जगत के दुःख को हरत भये समस्त जो लोक तथा लोकप नाम लोकपाल सो सब चक्रवाक तथा कोकनद नाम कमल भये ताके शोकको हरने वाले ऐसा जो हंस नाम सुर्यतद्रूप हनुमान सुविशालनामअत्यन्त बड़ो तथा कठिन विग्रह नाम स्वरूप जाको वज्रको जो मारतहत कठोरहै सर्व्वाङ्ग जाको वज्र समान नख दांत श्रेष्ठ शोभैहै जाको वालधि नामपुच्छ हहतनाम

बिस्तार शस्त्र जो फेंकिकरि चले बरछी आदिअस्त्र जो हाथ सों ग्रहण करि चलावे ताकों धारणकियेवैरि जो शत्रु सब ताकेनाश करबे कों कुधर नाम कुपृथ्वी ताको धारण करने वाले अर्थात् पर्वत तेहिकों धारण किये श्री जनक नन्दिनीको जो शोचतथा सन्ताप छोड़ावने वाले अर्थात् श्री रामजूके विरहकरि शोचतथा रावणादिके आधीन होबेकों सन्ताप ताको पूर्व अशोकवाटिका विषें श्री रामजूको कुशल मङ्गल आगमन कहिकर शोच छोड़ाये तथा रावणादि को बधकराय श्री रामजू तें मिलायकरि सन्ताप दूरिकिये यहभावहै रामजू लक्ष्मणजू को आनन्दसो वारिजनाम कमल भयो ताकों बिकाश विशेष करि विकाश कर्ता अर्थात अनेक कार्य करके दोऊ भैयन के आनन्द के बढ़ावने वाले कीस जो वानर ताको कौतुक पूर्वक केलि जो लीला लूम जो पुच्छ तेहितें लंकाको जरावत भये तेजराशि जो सूर्य तरुण नाम युवा अर्थात् दो पहरके सूर्यको प्रकाश जामो समुद्र विषै पाषाण को जलयान नाम जहाज करनेवाले जातुधान नाम राक्षसनके प्रचुर जो समूह ताकों हर्ष पूर्वक हंतानाम नाशकर्ता दुष्ट जो रावण कुम्भकरण पाकारि जो इन्द्रताकों जित नाम जीते जो मेघनाद तेह सबकेमर्म भितनाम मर्मस्थानके भेदनकर्ता अर्थात् जौने स्थान के घाव कियेतें मृत्यु मूर्च्छा होय तेहि अंगनिके छेदने वाले कर्म जो पापादिताके परिपाक नाम फलके दाता सम्पूर्ण भुवन के एक नाम मुख्य भूषण विभीषण कों वरके दाता अर्थात् जौने याचा सों लंका जराये तेहि समय बिभीषण जब अपनो दुःख कहत भये तब श्री महावीरजू विभीषणकों आशीर्वाद रूपवरदान देतभये कि श्री रामजू तुम्हारे दुःखकों हरेंगे विहितनाम उचित कियेहैं श्रीराम जू के संग्राम विषै सांका अर्थात् लंकाको संग्रामसो जोहवो कर्तव्यता को ध्वजाश्री रामायणादि विषें विदितहै लंका को जीति करि श्री लक्ष्मणजू श्रीजानुकी जीके सहित पुष्पक विमानकेऊपर विद्यमान होकरि सूर्य कुलके सूर्य रूप जो श्री रामजू सो श्री अयोध्या जूकों चलत भये तेह समय सों विमान के ऊपर बैठे जो श्री महावीर सो श्री रामजू की कीर्ति रूप पताका नाम ध्वजा तुल्य शोभत भये पर नाम जो शत्रु तेहि के किये जो यंत्र मंत्र अभिचार रूप अर्थात् नाश के अर्थ ताकों ग्रसन नाम नाश

कर्ता तथा कार्मन नाम और के हिंसा निमित्त प्रयोग तेहिका कुट नाम समूह तथा और जो हत्या आदिक क्रिया तेहि सबके नाश कर्त्ता शाकिनी आदि जोगन तेहिका यूथ जो समूह ताकी जंतानाम जीतनेवाले वेदान्त शास्त्रको विधि जो साधन सिद्धिको विज्ञान अन्य जो विधि प्रकार की विद्या विशद नाम सात्विकी तथा वेदनाम साम १ ऋग् २ यजु ३ अथर्वण ४ वेदांग नामवेद को जो अंगसिच्छा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ छन्द ५ ज्योतिष ६ यह सबके विद्नाम ज्ञाता ब्रह्मवादि नाम ब्रह्म जो परमात्मा ताके स्वरूप के वक्ता ज्ञानादि के पाच विभेनाम सामर्थ अन्यत स्पष्टहै काल जो चणमास वर्ष गुण सत्वादि कर्म काइक वाचिक मानसिक माया जो सब जीवको मोहित कररही है यह सबके प्रबलताओ मथन नाम भक्तन के हृदयतेंदूरि करनेवाले निश्चल नाम अचल है ज्ञान व्रत जेहिका सत्य विषे रत नाम तत्पर धर्म केचलावने वाले तुलसी जो प्रनाम करत ताको जो भय सोई तमनाम अन्धकारताके नाश करवेको अरिनाम सूर्यरूप॥ २६॥

मू०। जयतिमङ्गलागारसंसारभारापहरवानराकारविग्रहपुरारी।
रामरोषानलज्वालमाला मिषध्वांतचरशलभसंहारकारी।
जयतिमरुदंजनामोद मन्दिरनत ग्रीव सुग्रीव दुःखैकबन्धो।
जातुधानोद्धत क्रुद्धकालाग्नि हरसिद्धसुरसज्जनानन्दसिन्धो।
जयतिरुद्राग्रणी विश्वविद्याग्रणी विश्वविख्यातभटचक्रवर्ती।
सामगाताग्रणीकामजेताग्रणीराम हितरामभक्तानुवर्ती।
जयतिसंग्रामजयराम संदेसहरकोशलाकुशलकल्यानभाषी।
रामविरहार्कसंतप्तभरतादिनरनारिशीतलकरणकल्पशाषी।
जयतिसिंहासनासीनसीता रमननिरषि निरभरहरषनृत्यकारी। रामसंभ्राजशोभा सहित सर्वदातुलसिमानसरामसुरपुरविहारी॥ २७॥

टी०। मङ्गलके गृहसंसारको जो भार तेहिके अपहरनामदूर करनेवाले वानर को स्वरूप शिवजू के विग्रह नाममूर्तिपी रामजू को जो क्रोध सोई अग्निके ज्वालाको समूह भयो ताको मिष नाम बहाना करिके ध्वांतनामजो अन्धकार तामें चलने वाले अर्थात् निशिचर जोअसुरन्हको समूह सोई भये सलभनाम फनिगाताको नाशकर्ता मरुत जो वायु औ अंजनीको जो आनन्दताके गृहनत